विवशता

आपसे....

'विषमता' की कहानियाँ आप तक पहुँचाते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। प्रस्तुत संकलन मेरा पाँचवा कथा-संग्रह है। पिछले चार दशकों से अपनी रचना-यात्रा के जिस पड़ाव तक मैं पहुँचा हूँ, इसका निर्णय तो आप सभी, मेरे सुधी पाठक करेंगे। अपनी ओर से मैं आपसे इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि मैंने कहानी को सहज ढंग से लिया है। न तो मैंने फार्मूला-बद्ध कथा-लेखन किया है। और न ही हिन्दी-कहानी के विविध आन्दोलनों में मेरी दिलचस्पी रही है। इतना अवश्य है कि समय के साथ-साथ हिन्दी कहानी का स्वरूप बदला है, और नई हिन्दी कहानी निरंतर विकसित होती चली गई है।

संवेदना और युग-परिवेश से सतत जुड़ाव किसी भी रचना की पहली शर्त है। आज की उपभोक्ता-संस्कृति से ग्रस्त जिन्दगी, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में तनाव और कुंठा, सम्बन्धों का अवमूल्यन तथा नारी-शोषण आदि को मैंने इन कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है। मैं इस प्रयास में कितना सफल हुआ हूँ, यह कह पाना मेरे लिए कठिन है। फिलहाल 'विषमता' आपको समर्पित है।

388, भूपालपुरा
उदयपुर 313001

आपका
राजेन्द्र सक्सेना

कहानी-क्रम

बहुत से दुःख

टेलीफोन की घंटी बराबर बज रही थी। वह बजे ही जा रही थी, किन्तु वंदना ने रिसीवर उठाया नही। वह अपने कमरे में ड्रेसिंग टेबल के सामने तैयार होने में व्यस्त थी। घड़ी में साढ़े तीन बज रहे थे। उसे चार बजते-बजते निकल जाना था। आज की किटी पार्टी की वह होस्ट थी होस्ट अर्थात् मीनू, गेम्स आदि पार्टी का और दूसरा इंतजाम सब वन्दना के ही जिम्मे था। वन्दना जानती है, फोन नरेश का ही होगा। नरेश अर्थात् उसका पति। पूरा नाम नरेशचन्द्र तापड़िया। इंडस्ट्रियल इस्टेट मे उनकी होजयरी मिल है। अपर्णा वीयर्स। पिछले महिने भर से फैक्ट्री बन्द पड़ी है। हड़ताल चल रही है। रिट्रेन्चमेन्ट के मसले को लेकर। यूनियन वाले कह रहे थे--जिन वर्कर्स को निकाला है उन्हें वापस लो। लेकिन मालिकों का कहना था, उन्होने सेट-अप-रीआर्गेनाइज्ड किया है। इतने आदमियों की जरूरत नही है। नरेश स्टेटस में मेनेज-मेन्ट का विशेष अध्ययन कर लौटा है। उसी का यह परिणाम है। पिता विमलचन्द्र तापड़िया 'तापड़िया इन्टरप्राईजेस' के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। वे काफी रसूक वाले आदमी हैं। नगर के पुराने उद्योगपति अपने प्रभाव से उन्होने मामला एडजूडिकेशन के लिए इंडस्ट्रियल ट्रिब्युनल में जाने ही नहीं दिया।

वन्दना ने एक भरपूर नजर अपने ऊपर डाली। बालों पर ब्रश फिराया। गले पर पाउडर कुछ लाउड हो गया था। उसे ठीक किया। एक बार फिर स्प्रे कर झपटकर उसने टेलीफोन उठा लिया। 'हाँ,' मैं वन्दना बोल रही हूँ। सारी डार्लिंग, तुम्हें वेट करना पड़ा। ठीक है।

मैं रास्ते मे मिसेज गांगुली को पिक अप कर लूंगी। मुझे पता है। गांगुली साहब आजकल तुम्हारे बी वी आई. पी. हैं। नही भूलूंगी। हंसकर वन्दना ने टेलीफोन रख दिया।

पार्टी मे मिसेज गागुली को लेकर जब वन्दना होटेल पहुँची, वह सचमुच लेट हो गई थी। तम्बोला शुरू हो गया था। एक पैसा पाइन्ट खेल चल रहा था। वन्दना के पहुचते ही नीलिमा दास ने आड़े हाथों लिया 'कहां गायब रही। अब आ रही हो?'

'सारी मैडम' वन्दना ने क्षमा सी मागी। मिसेज दास का सभी रोब मानते है। मानना भी चाहिए। मिस्टर दास सेक्रेटरी हैं किसी मिनिस्टरी में। नीलिमादास ने श्रीमती गागुली का हाथ पकड़ा और डायनिंग हाल के एक कोने मे वे जा बैठी। दोनों में खूब पटती है। एक तो बराबरी का मामला है। दूसरे अपनी बेटी काजल को लेकर वे आजकल काफी परेशान है। अट्ठाईस की होने को आयी पर कही उसकी शादी तय नही हो पा रही है। नाक-नक्श अच्छा है। कुछ मोटी जरूर है। रग भी सावला है। गागुली का लड़का शेखर बुखारो में इंजिनियर है। उस पर उनकी निगाह है। शायद बात पट जाये।

नीलिमा बता रही थी — 'काजल जिद कर रही थी निकीताशा के श्री डी० टी० बी० के लिए। आज उसके पापा ने ला ही दिया। इट इज रियली फैंटास्टिक।

'आज तुम उसे इसीलिए नही लायी क्या?' मिसेज गांगुली ने पूछा। 'नही' ऐसा कुछ नही है आजकल उसकी डाइटिंग चल रही है। 'योगा' क्लास भी जाइन कर रखा है। कहती है—'बहुत थक जाती हूँ ममी।' कुछ स्लिम हुई क्या? मिसेज गांगुली ने पूछा। 'हां इधर उसने काफी रिड्यूस किया है।' शेखर कब आ रहा है? बड़ी आत्मीयता से उन्होने मिसेज गांगुली से पूंछा।

"कहां आ रहा है शेखर ? लिखा है, छुट्टी ही नहीं मिल रही है। उसके यहाँ इंसेटिव स्कीम चल रही है। बड़ा मूडी लड़का है। तुम और जगह भी बात चलाती रहो। शेखर के भरोसे मत बैठी रहना। कहकर मिसेज गांगुली श्रीमती चोपड़ा के साथ बातें करने लगीं।

माया चोपड़ा काफी प्रौढ़ हैं लेकिन अपनी उम्र छिपाने के लिए मेकअप, साड़ी आदि सभी का सावधानी से चुनाव करती हैं। फिर भी उनकी बेहद मोटी आवाज और थुलथुल शरीर वास्तविकता का आभास करा ही देता है।

"सुना है चोपड़ा साहब फिर अपने किसी बिजनेस टूर पर हैं। इस दफा कहाँ गये हैं ? हांगकांग या........।" मिसेज इनामदार पूछ रही थी।

"उन्हें पिछले हफ्ते ही लौटना था पर नहीं आये। कल उनकी सेक्रेटरी का फोन था, कह रही थी, पन्द्रह दिन और लग सकते हैं।" माया चौपड़ा ने बुझे स्वर में कहा।

दूर खड़ी दीपाली ने हंसकर मंजू सिन्हा से कहा—पन्द्रह क्या एक महीना भी लग सकता है। पंकज कह रहा था, आजकल उन्होंने किसी मिस अहलूवालिया को अपना नया सेक्रेटरी बना रखा है। बेहद खूबसूरत है, कम्बख्त। इस बार चोपड़ा साहब के साथ वही गयी है। बेचारी मिसेज चौपड़ा, फिर दीपाली और मंजु दोनों धीरे से हंस पड़े।

"हाँ, तुम्हारा डिम्पी अब कैसा है ?" पूछा मंजु ने। "अब ठीक है" दीपाली बोली—"उसे डी-हाईडेशन हो गया था। मैंने नयी आया रखी है। डिम्पी को बड़ा प्यार करती है। अभी मैं आयी तो जरा भी नहीं रोया। तारा तो उसे दिन भर रुलाती रहती थी। आजकल अच्छी आया मिलती ही कहाँ है।" यू आर लकी मंजु ने कहा "मेरी

शैल आंटी काफी परेशान हैं। कोई ढंग की माया आज तक उन्हें मिली ही नहीं है।

"तुम कह रही थीं, शैल आंटी की कोई कजिन थी। भला सा नाम था शीला, ऐसा ही कुछ। ड्रग लेती थी। उसकी शादी हो गयी ?

"शादी क्या होगी ? उम्र ही निकल गयी। इन दिनों किसी साइकेटरिस्ट का इलाज करा रही है।"

"तुमने उनकी कजिन को देखा है ?"

"हाँ, एक बार। इट इज सो सैड" कहते-कहते मंजु चीज पकोड़े से अपनी प्लेट फिर भर लायी। लो तुम भी लो, ऐसे चीज पकोड़े और जगह नहीं मिलते।"

चाय-नाश्ता कभी का सर्व किया जा चुका था। उधर खेल भी खत्म हो गया था। वेटर ने ताश के पत्तों को समेट कर रख दिया था।

"आजकल मिसेज ग्रोवर पार्टी में दिखाई नहीं देतीं। क्या उन्होंने मेम्बरशिप डिस-कन्टीन्यू कर दी है ?" मिसेज गांगुली ने वन्दना से पूछा। "नहीं दीदी, तापडिया साहब बता रहे थे—ग्रोवर साहब काफी बीमार हैं। नर्सिंग होम में भर्ती है बड़ी परेशान है मिसेज ग्रोवर, वन्दना ने कहा। क्या बीमार है ? मैंने तो सुना था इन दिनों वे काफी पीने लगे है।"

"पीते कब नहीं थे ? डाक्टर माथुर बता रहे थे ड्रिंक्स उनके लिए जहर है। लेकिन उनकी ग्रोवर साहब ने एक नहीं सुनी। अब भुगत रहे हैं।"

"भुगत तो मिसेज ग्रोवर रही हैं। यू नो, शी इज सो यंग।

अगर कहीं मिस्टर ग्रोवर को कुछ हो गया तो—।" फिर कुछ याद सी करती हुए वे बोलीं—"तुम्हारी फैक्ट्री का क्या हुआ मिसेज तापड़िया? क्या अब भी बन्द है?

"हाँ दीदी वह बन्द ही है। फैक्ट्री को लेकर तापड़िया साहब काफी चिन्तित रहते हैं।"

"अब चिन्ता करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। गांगुली साहब कह रहे थे, यूनियन की डिमांड फाइनली रिजेक्ट हो गयी है।"

"थैंक्यू दीदी। यह सब गांगुली साहब की ही मेहरबानी है। तापडिया साहब तो उन्हे बहुत मानते है। उपकृत सी होते हुए वन्दना ने कहा—' आप हमारे यहाँ कल चाय पर आ रही हैं ना?

"वी शेल ट्राय"—कहते हुए मिसेज गांगुली ने एहसान सा जताया।

स्नेक्स और चाय-काफी का दौर चल रहा था। मिसेज इनामदार और मंजु सिन्हा बार-बार डिस्को या वेस्टर्न म्यूजिक का कोई नया कैसेट लगाकर सुन रही थी। सुन ही नही रही थी, सुर-में सुर मिलाकर गा भी रही थी। उस शोर में भी बाहर सड़क पर मिले जुले नारे सुनाई पड़ रहे थे।" यह सब क्या है? मिसेज इनामदार ने वेटर से पूछा।

"कोई जुलूस है मेम साहब? बाई लोगों का (वेटर ने कहा) नारे और नजदीक सुनायी देने लगे। "दहेज प्रथा बन्द करो।"—नारी को जलने से बचाओ, "अब हम पुरुषों का अत्याचार नहीं सहेगी।" आदि आदि।

कुछ देर के लिए वे सब होटल की बालकनी मे इकट्ठी हो गयी। "एंटीडाउरी प्रोसेशन है"—मिसेज दास ने कहा। जुलूस के आगे बढ जाने पर वे लोग फिर डाइनिंग हाल में लौट आयी।

"पता नहीं हमारे देश को हो रहा है ? मिसेज इनामदार ने कहा—कही डाउरी प्राब्लम है, कहीं रेप, कहीं ड्रग रैकेट। इट इज सो डिसगस्टिंग।"

"दास साहब तो कहते हैं, काजल की शादी करके अमेरिका चले चलें। वहाँ उन्हे बडा हैंडसम जाब मिल रहा है। दिस कंट्री इज नाट वर्थ लिविंग।"

"अरे आप के तो एक लड़की है मिसेज दास, उसी से आप घबरा गयी। मिसेज अग्रवाल को देखो, दो लड़कियों को तो पार लगा दिया।

"मिसेज अग्रवाल की बात और है कहकर मिसेज दास ने मुस्कराते हुए विनीता अग्रवाल की ओर ताका।"

"बात सिर्फ इतनी है नीलिमाजी, पैसा सब कुछ करा देता है। मीरा की शादी मे पूरे एक लाख खर्च हुए थे। फ्लेट हमने उसे अलग दिया है। और बीना तो काफी लकी है। उसके लिए घर बठे बिठाये लड़का मिल गया। नौकरी के लिए इनके पास आया था। मैनेजमेंट का कोर्स करा कर उसे बम्बई ब्राच का इन्चार्ज बनाकर भेज दिया। इतना सब आवलीगेशन क्या कम था ? रह गयी अजली। वह कहती है—अरेंज मेरेज नही करूगी। इन्होने अजली के नाम पर पचास हजार फिक्स डिपाजिट मे डाल दिये हैं। जो जी मैं आये करें।—कहते-कहते उनके अहम् को जैसे एक संतुष्टि मिल रही थी।

विनीता अग्रवाल अपने गहरे नीले रंग की सिफोन की साडी ठीक करने लगी। उन्हे सिफोन की साडी ही पसन्द है। जिसे पहनकर वे महसूस करती हैं, सिफोन में वे काफी स्लिम दिखाई देती हैं, जबकि यह महज इनका वहम है।

"हां कल इनर व्हील की मिटिंग है। इस दफा एन्युवल डे पर हम लोग फेन्सी ड्रेस काम्पीटीशन रख रहे हैं। दीपाली, तुम आओगी

ना। सच बड़ा मजा रहेगा। मिसेज़ विनीत अग्रवाल ने आग्रह किया।

"आती जरूर, लेकिन कल कुछ लोग खाने पर हमारे यहां आ रहे हैं। रात के ग्यारह तो बजेंगे। दीपाली ने कहा।

"आपकी यह साड़ी बड़ी बढ़िया है।" मिसेज कपूर बोलीं।

तुम्हें पसन्द है, पूछा मिसेज अग्रवाल ने—अभिलाषा को फोन कर दूंगी। उसके पास अब सिर्फ तीन पीस ही रह गये हैं। शायद बिके ना हों।

"हम लोग आज शाम को ही ले आयेंगे," मिसेज कपूर ने कहा।

पार्टी खत्म होते-होते मिसेज गांगुली बोलीं—"मिसेज तापड़िया, आप मुझे घर लौटते समय जरा मिसेज ग्रोवर के यहां ले चलना-कर्टसी काल करना है।"

"मिसेज तापड़िया नहीं, आप मुझे सिर्फ वन्दना कहा कीजिये प्लीज। फिर मैं आपसे उम्र मे भी कितनी छोटी हूँ। ग्रोवर साहब के यहां मुझे भी जाना था। उसी तरफ होकर निकल चलेंगे।"

"ओ. के. अब सिर्फ वन्दना ही कहकर तुम्हें पुकारूंगी। कहते हुए मिसेज गांगुली ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख कर धीरे से दबा दिया एक आश्वासन का हाथ।

☐

अपने विरुद्ध

श्रुति आज भी सो नही पा रही है। कल रात भी ऐसा ही हुआ था। कल रात ही क्यों। उससे पिछली रात भी। उसके सामने के क्वार्टर में टी. वी. अब भी चल रही थी। काफी शोर शराबा था। मिली जुली आवाजें, हसी के ठहाके फिर क्षणांश के लिये मौन। पुनः मुखर होते संवाद। और उनके बीच चलता हुआ फिल्मी गीतों का सिलसिला।

टीचर्स कालोनी के इस क्वार्टर में रहती है श्रुति। सामने की यूनिट में रहती है उसकी कलिग वर्तिका। इन दिनों वर्तिका के यहां सुखेन्दु आया हुआ है। सुखेन्दु फ्रीलांस जर्नलिस्ट है। वर्तिका और सुखेन्दु को लेकर इन दिनों कालोनी मे ही नही कालेज में भी काफी चर्चा है। उस दिन जब स्टाफ रूम मे वाश बेसिन पर वर्तिका चाक से पुते हुए अपने हाथ धो रही थी पास ही बैठी हुई मिसेज भारद्वाज ने श्रुति से कहा था - 'देखा तुमने श्रुति। वर्तिका आज भी नई साड़ी पहन कर आयी है। इन दिनों वर्तिका अब ज्यादा सजी संवरी रहती है। सुखेन्दु जो आजकल आया हुआ है।" फिर उनके मुख पर एक रहस्यमयी मुस्कान खिल उठती थी।

"आप सुखेन्दु को जानती हैं।" पूछ लिया था श्रुति ने।

"मैं ही नही और भी टीचर्स सुखेन्दु को जानती हैं। दो साल से इनका अफेयर चल रहा है।"

"अफेयर" कह कर श्रुति चुप हो गयी थी। वर्तिका टावेल से

हाथ पोंछ कर उन दोनों के पास ही बैठ गयी थी। मिसेज भारद्वाज ने फिर कोई टिप्पणी नहीं की थी।

श्रुति को याद आया— तब वह इस कालेज में नयी-नयी नियुक्त हुई थी। प्रिंसीपल श्रीमती जोन ने अपने चेम्बर में सभी टीचर्स से उसका परिचय कराया था। तब सबसे स्मार्ट वर्तिका ही लग रही थी। वर्तिका ने अपना पूरा परिचय देते हुए कहा था—"आई एम अन मेरीड। मम्मी नहीं है। पापा दिल्ली में अपना बिजनेस देखते हैं। यहां मैं अकेली रहती हूँ और आपके मिस्टर।"

"मैंने अपने मिस्टर को छोड़ दिया है। आई एम ए डाईवर्सी।" श्रुति कह रही थी। तभी प्रिंसीपल ने कहा था—क्या सब कुछ आज ही पूछ लोगी वर्तिका। श्रुति को चाय तो पीने दो। ठण्डी हो रही है।"

"घर में आप अकेली हैं?" श्रुति से वर्तिका ने पूछ ही लिया। "नहीं" मेरी पांच साल की लड़की है निधी। उसे होस्टल में रख कर पढ़ा रही हूँ।" कह कर प्रिंसीपल के चेम्बर से उठ आयी थी।

"स्टाफ रूम में बहस चल रही थी। मिसेज भारद्वाज ने कहा था—तुम्हें अकेलापन नहीं लगता श्रुति। फिर तुम अब भी थर्टीज में हो। दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेती।"

"क्या शादी जरूरी है?" पूछ रही थी वर्तिका। "फिर एक ने हो श्रुति को क्या निहाल किया है।" वह आक्रामक होने लगी।" मैं शादी नहीं करूँगी। आई हेट मेन डोमीनेशन। आखिर पुरुष प्रधान समाज को हम क्यों नहीं बदलते? आज की नारी सभी क्षेत्रों में समान कार्य करती है। उसकी बौद्धिक क्षमता और अर्थोपार्जन की शक्ति पुरुष जैसी ही है। फिर वह अपनी पसन्द का जीवन क्यों न जीये। अपनी पूरी जिन्दगी किसी पुरुष के कहने पर और किसी पुरुष के लिये

ही क्यों बिताये। पैसा और शोहरत वो भी पा सकती है। उसकी भी अपनी हैसियत है। सामाजिकता है।"

"यू आर मिस टेकन। यह जरूरी नहीं कि शादी के बाद यही सब कुछ हो फिर सबसे बड़ी चीज एडजस्टमेन्ट है।" मिसेज भारद्वाज ने कहा था। "हम आज भी परम्परावादी समाज में जी रहे हैं। बिना शादी किये हुए लोक निन्दा, अकेलापन, शोषण, क्या क्या बेचारी नारी को झेलना नहीं पड़ता है ?"

'आई एग्री विथ यू। इसके अलावा जो सामाजिकता, प्रतिष्ठा, और सुरक्षा विवाहिता स्त्री को मिलती है वह क्या अविवाहिता स्त्री को मिल पाती है ?" श्रीमती आभा कपूर ने कहा था।

"वह सब आज की नारी स्वयं अर्जित कर सकती है। आत्म विश्वास, आत्म सन्तुष्टि और प्रशंसा सब कुछ अपने कैरीयर के माध्यम से वह पाती है। वर्तिका ने प्रतिवाद करना चाहा था।" और सुरक्षा। मैं बिलकुल सुरक्षित हूँ। कहते कहते वर्तिका हंसी थी।

"क्योंकि तुम सुविधा सम्पन्न और सुशिक्षित परिवार से जुड़ी हुई हो। यदि तुम किसी आफिस में रिसेप्शनिष्ट, टैलीफोन आपरेटर, या सेल्स गर्ल होती तो यह सब नही कहती। "श्रीमती कपूर ने व्यंग किया था।" और फिर पाँच साल बाद क्या होगा। जानती हो। तुम क्या सदा ऐसी ही बनी रहोगी ? ढलती उम्र मे भला नारी को कौन पूछता है। "कह कर उन्होने एक अर्थ पूर्ण हसी हंसी थी।

श्रुति जानती है—श्रीमती कपूर की बात काफी तीखी थी। किन्तु उसके पीछे एक मर्म है। श्रुति इस मर्म को जानती है। श्रुति को याद है—बी. ए. करते करते उसके पापा ने उसके लिए योग्य वर तलाश करना शुरू कर दिया था। देर लगने लगी तो उसे एम. ए. करा

दिया। फिर एक साल बैठे-बैठे ही बिगड़ गया। बी० एड० तो उसने शादी के बाद किया था।

फिर स्मृतियों का एक लम्बा इतिहास श्रुति के सामने जीवन्त हो उठा था उसने तय किया था, अखिल से विवाह के बाद वह नौकरी नहीं करेगी। श्रुति जानती है, नौकरी से स्त्री का अपना घर कितना सफर करता है। पूरे मन से वह अपनी गृहस्थी में जुट जायेगी। जुटी भी थी श्रुति। किन्तु सब कुछ व्यर्थ हो गया था। अखिल ने माँ बाप के प्रेशर में आकर यह शादी की थी। रोबदार और शहर के प्रतिष्ठित इंडस्ट्रीयलिस्ट अखिल ने श्रुति को पसन्द नहीं किया था। पसन्द भी वो कैसे करता? दरअसल वह किसी और से प्रेम करता था। अखिल उसे भी घर में लाकर रखना चाहता था। श्रुति के साथ-साथ। शर्त थी, श्रुति को उप पत्नि बन कर रहना होगा। अखिल के रूप में श्रुति ने एक अत्याचारी पुरुष को ही पाया था। शारीरिक रूप से सबल, पाशविक और क्रूर एक सहृय पति नहीं। एक बार उसने श्रुति को जहर देने की कोशिश भी की थी। श्रुति यह सब सह नहीं पायी थी। अखिल ने स्पष्ट कर दिया था वह कोर्ट में नहीं आयेगा। सेपरेशन सूट श्रुति को ही फाईल करना पड़ा था। श्रुति ने निश्चित किया था। वह पगु नहीं बनेगी। आत्म निर्भर होने के लिए उसने नौकरी कर ली थी।

इतिहास का दूसरा परिच्छेद श्रुति को और भी संतप्त करता है। श्रुति न तो किसी आफिस में रिसेप्शनिस्ट थी, न टेलीफोन आपरेटर और न सेल्स गर्ल। फिर भी श्रुति के लिये जीना दूभर हो गया था। पापा ने उसकी दूसरी शादी का विज्ञापन दिया था। साफ-साफ लिखा था-वान्टेड ए सुटेबल मैच फार ए डाईवर्सी गर्ल विथ ईयर ओल्ड डाटर........आदि आदि। परिणाम कुछ नहीं निकला था।

उस दिन स्टाफ रूम में मिसेज भारद्वाज से श्रुति ने पूछा था—

आप सुखेन्दु को जानती है।" मिसेज भारद्वाज ने उत्तर दिया था—"मैं ही नहीं और टीचर्स भी सुखेन्दु को जानती हैं। दो साल से वर्तिका के साथ उसका अफेयर चल रहा है।"

श्रुति भी सुखेन्दु को जानती है। उसे नौकरी करते हुए एक वर्ष भी नहीं बीता था कि यही सुखेन्दु उसके जीवन में आया था। एक पार्टी में वे लोग मिले थे। फिर बार-बार मिलने का सिलसिला शुरू हुआ था। सुखेन्दु श्रुति में काफी रुचि लेने लगा था। श्रुति में भी न जाने सुखेन्दु को लेकर कैसी नयी चेतना और नयी स्फूर्ति जागने लगी थी। सुखेन्दु ने समझाया था—"सभी पुरुष एक से नहीं होते श्रुति। फिर तुम में वह सब है जो सभी स्त्रियों में नहीं होता। तुम हां तो करो फिर देखना।" सुखेन्दु ने विश्वास दिलाना चाहा था। कैसे मुग्ध भाव से श्रुति देखा करती थी जब कालेज मेन गेट पर वह सुखेन्दु को प्रतिक्षारत पाती थी। वह कैसा सम्मोहन था? कैसा आकर्षण?

फिर वे सारे सपने जागने लगे थे। श्रुति ने नव वधु का फिर से शृंगार किया। शहनाई फिर बज उठी है। सुखेन्दु दुल्हा बन कर बारात लेकर आया है। श्रुति को लगा था। और अब वह दिन आये। अब आये। अचानक सारा दृश्य ही बदल गया था। केवल एक सप्ताह के लिये बाहर जाने का कह कर सुखेन्दु गया था। किसी कान्फरेन्स में भाग लेने के लिए। वह सप्ताह भर में लौटने का वायदा कर गया था। किन्तु सप्ताह, महीना और फिर एक महिना धीरे-धीरे बीत गये थे। सुखेन्द नही लौटा था और न ही उसने कोई पत्र लिखा था। श्रुति की सहेली मजु ने कहा था—'सब पुरुष एक से ही होते हैं श्रुति। सुखेन्दु केवल तुम्हारे साथ समय काटता रहा है। वह अब नहीं लौटेगा। कभी नही।"

श्रुति सुखेन्दु को भूल नही पायी थी। विश्वासघात का आघात

सहना कितना कठिन होता है ? कितना कठिन होता है वह सब सह पाना, श्रुति जानती है।

उस दिन जब वनिका के क्वार्टर के सामने सुखेन्दु हाथ में अटैची लिये श्री विलर से उतरा था, श्रुति पहचान गयी थी। हाँ, यह सुखेन्दु ही है वही तो है। वैसे ही सूखे लम्बे बाल, उन्हें पीछे लौटाने की वही अदा। वैसा ही सम्मोहन। उसे आया देख कर वनिका की आंखें चमक उठी थीं। आटो रिक्शा वाले के सामने ही। वे लगभग आलिंगन बद्ध हो गये थे। श्रुति यह दृश्य देख कर बरामदे से अपने कमरे में लौट आयी थी।

मंजु की बात सुन कर श्रुति को एक निरर्थकता का एहसास हुआ था। आखिर वह परित्यक्ता है। और परित्यक्ता को भला कौन स्वीकारता है। जैसे उसके साथ एक अवाद जुड़ जाता है। पति से क्यों-नहीं मिली। दोष उसका ही होगा। उसके आस-पास संशय की एक दुर्भेद्य दीवार खींच जाती है तब कितने असहाय होने का बोध होता है। मंजु ने कहा था—"सुखेन्दु के इतना निकट जाकर तुमने अच्छा नहीं किया श्रुति। आखिर धोखा खा ही गयी। सुखेन्दु ने सोचा होगा तुम कितनी चीप हो। उस असहाय बोध और निरर्थकता के साथ-साथ एक और भावना जुड़ गयी हैं, यातना और पीड़ा की। सुखेन्दु ने आते जाते श्रुति के क्वार्टर की ओर देखा था। उसकी नेम प्लेट पढ़ने की कोशिश की थी। तो क्या श्रुति की उपस्थिति को सुखेन्दु जान गया है ? फिर भी कितना तटस्थ स्वयं को किये हुए है सुखेन्दु।

तीन दिन किसी तरह बीत गये। सुबह जब कालबेल बजी, श्रुति नहाने की तैयारी में थी। कालेज में परीक्षाएँ चल रही थी। आठ बजे से उसकी इनवेजीलेशन ड्यूटी थी। श्रुति ने दरवाजा खोला तो देखा

वर्तिका खड़ी है। नये फैशनेबल ब्राऊन में हल्का मेकअप किये। अरे तुम—"आओ अन्दर बैठो।" श्रुति ने आत्मीयता से कहा।" बैठूंगी नहीं, तुम्हें मेरा एक काम करना है। आज मैं कालेज नहीं आ रही हूं। जोन मेडम को मैंने बता दिया है। तुम मेरी शाम की इनवेजीलेशन ड्यूटी कर लेना प्लीज। लंच वहीं मेस से मंगवा लेना।" वर्तिका उत्साह के अतिरेक में कह रही थी। श्रुति ने पूछा—"क्यों क्या आज बहुत बिजी हो।" हां बिजी ही समझो। सुखेन्दु आया हुआ है। आज हम पिकनिक के लिये नेहरू गार्डन जा रहे हैं। दिन भर बोटिंग करेंगे। कहते कहते वर्तिका ने एक रहस्यमयी दृष्टि से श्रुति की ओर ताका। तुम शायद नहीं समझ पाओगी। हां, एक बात और सुखेन्दु कह रहा था, तुम उससे पहले मिल चुकी हो। शायद दिल्ली में। तुम सुखेन्दु को जानती हो।

"हां मैं जानती हूँ—नहीं भी जानती हूँ। शायद पूरी तरह नहीं जितना तुम जानती हो। किन्तु अब जान लोगी। हम लोग फिर बातें करेंगे। देखो पौने आठ बज रहे है। मुझे कपड़े पहन कर आठ बजे तक कालेज पहुंचना है। मैं तुम्हारी शाम की इनवेजीलेशन ड्यूटी कर दूंगी। "ओ के थेंक्स" कह कर वर्तिका उसी तरह चली गयी। लहराती हुई।

श्रुति देख रही थी—कितनी ताजगी और आकर्षण है वर्तिका में। शायद अभी तीस की भी नहीं है। सुखेन्दु और उसकी उम्र में खासा अन्तर होगा किन्तु श्रुति आखिर परित्यक्ता ठहरी। पर सुखेन्दु तो उसे कितना पसन्द करता था। तब सम्बन्ध बनाने को वह कितना लालायित रहता था। आज भी वह सोच कर एक कुण्ठा-ग्रस्त चेतना श्रुति के मन में व्याप्त हो जाती है। किन्तु इस सब को पूरी खामोशी से श्रुति सह लेती है।

रात के साढ़े बारह बजे थे। सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की से यों ही श्रुति झांक रही थी। उसने देखा वर्तिका और सुखेन्दु

एक दूसरे की बांह थामे चले ग्रा रहे हैं। शायद वे लेट शो से लौट रहे थे। सुखेन्दु बेहद शोख श्रौर रोमांटिक मूड में था। वर्तिका भी खिल खिलाकर हस रही थी। न जाने किस उन्मुक्त मानसिकता मे दोनों खोये जा रहे थे। दोनों फुल्ली इनवाल्व्ड थे।

ग्राज भी सुबह से वर्तिका श्रौर सुखेन्दु को लेकर स्टाफ रूम में कानाफूसी चल रही थी। मिसेज भारद्वाज कह रही थी--"वर्तिका ने एक महिने की छुट्टी के लिये एप्लाई किया है। सुना है दोनों घूमने ग्रमेरिका जा रहे हैं। इनका वीसा भी बन गया है।"

"शादी के बाद या पहले ?" श्रीमती कपूर ने पूछा "यह तो वर्तिका ही बतायेगी" कहते कहते मिसेज भारद्वाज हंसी थी।

वर्तिका ने सुबह ग्राकर बताया "ग्राज मेरी बर्थ डे है तुम्हें याद रहा कि नही श्रुति।"

ग्ररे हां ग्राज सोलह जून है। तुम्हें बधाई। श्रुति ने कहा—

"मैं बधाई यों नही लूंगी। रात का डीनर हम लोगो के साथ रहेगा। सुखेन्दु भी है। सच, बड़ा मजा रहेगा।"

"लेकिन मैं नही ग्रा सकूंगी। निधी ग्रा रही है। उसे स्टेशन लेने जाऊंगी। उसकी वेकेशन शुरू हो गयी है। पता नहीं गाडी कब ग्राये ? श्रुति ने दृढ़ता से कहा था।

ग्रपना सारा ग्रतीत श्रुति भुला देना चाहती है। किन्तु वह इतना सरल होता है क्या ?

लोह–कमल

काटेज-वार्ड का वह कमरा आज फिर डाक्टरों से भर गया था, शरद को रात से ही आक्सीजन पर रखा गया था। गुलाकोज की तीसरी बोतल चढ़ाई जा रही थी शेफाली रात भर "ड्रिप" के लिए अपने पति का हाथ पकड़े बैठी रही थी, । डाक्टर सेन गुप्ता कह गये थे, आज की रात पेशेंट के लिए बड़ी (क्रिटीकल) है । और शेफाली बैठी रही थी । नथुनों में बसी औषधियों की गंध, आंखों में अनेक रातों के जागरण से असंख्य कांटों की चुभन, अवसाद से भरा हुआ मन और मनसंताप में घुलती हुई शेफाली । अनिश्चितता के शून्य में डूबता हुआ वर्तमान और घने अन्धकार से घिरता हुआ भविष्य । उन दोनों के बीच अनेक स्मृतियां बुनती हुई शेफाली ।

"तुम जाकर थोड़ा आराम कर लो प्लीज"—विनय ने कई बार आग्रह किया था । किन्तु शेफाली नहीं मानी थी और स्वयं विनय रात भर उसके साथ जागता रहा था । आज ही रात को क्यों ? विनय कई रातों से शेफाली के साथ जागता रहा है । शरद की सम्पूर्ण बीमारी मे वह शेफाली के साथ काटेज-वार्ड में रहा है । उसकी तीमारदारी मे उसने पूरा हाथ ही नहीं बटाया है, आर्थिक रूप से भी उसने शेफाली की मदद की है । अपनी पति की असाध्य बीमारी की चिंता और दुःख में घुलती हुई शेफाली, स्पेशलिस्ट ने पहले ही रिपोर्ट देखकर बता दिया था—सारे टेस्ट पॉजेटिव हैं । बचने की कोई संभावना नहीं "ट्रीटमेन्ट" केवल चंद महीने या दिन ही रोगी को जीवित रख सकता है ।

शेफाली को याद आ रहा है—अभी परसों ही तो शरद ने अपने दुबले और पीत-वर्णी हाथों में उसके हाथ थाम कर कहा था—"मैं तुम्हें किसी प्रकार का सुख नहीं दे पाया शेफाली। मेरे बाद तुम दूसरा विवाह कर लेना और सुखी जीवन बिताना, भूल जाना मुझे।"

सुखी-जीवन—उस परिस्थिति में भी शेफाली को मन ही मन हंसी आ गई थी, पति, परिवार और घर सुख की इसी कल्पना से उसने शरद से विवाह किया था। अपने पापा और मम्मी के समस्त विरोधों के बावजूद प्रेम-विवाह। शरद के साथ उसका प्रेम विवाह ही तो था। नहीं तो कहाँ शेफाली और कहाँ शरद ?

"कैसी अशुभ बातें कर रहे हो"—कहते-कहते शेफाली ने शरद के मुँह पर अपनी हथेली रखदी थी, 'तुम जल्दी अच्छे हो जाओ"—फिर आगे के शब्द उसके होंठो पर थरथराकर रह गये थे। इन पांच शब्दों के वाक्य में छिपा हुआ असत्य स्वयं वह ही नहीं शरद भी जानता था और शरद और शेफाली ही नहीं—विनय भी जानता था—शरद का भाग्य अधर मे लटका हुआ है उसका जीवन-दीप कभी भी बुझ सकता है। शेफाली और शरद के बीच की वह डोर कभी भी कट सकती है। वह शरद का निकटतम मित्र था। शेफाली के अतिरिक्त उसके सुख-दुःख का सहभागी उन दोनों को एक सूत्र में बांधने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था किन्तु उनके विवाह को दो वर्ष भी नहीं बीते थे कि इस भयानक रोग के लक्षण प्रकट होने लगे थे, और उसने लगभग चार महीनों में ही यह रूप धारण कर लिया था। जब-जब विनय शेफाली को देखता, उसका मन विषाद से भर आता शेफाली जिसके अन्तर्मन मे अब कभी रागिनी से भरा हुआ स्वर नहीं फूटेगा, कभी सुख की बयार में वह नहीं झूमेगी, और उसके अस्तित्व के सरोवर में वे फूल नहीं खिलेंगे ?

विनय को लेकर इधर शेफाली के साथ एक प्रवाद जुड़ गया है। उसके पापा और मम्मी उसके निकट सम्बन्धी और परिचित बीच-बीच में आकर उसे देख गये हैं। विनय को लेकर एक शंका उठी, फिर वह सदेह घनीभूत होकर प्रवाह में बदल गया वह प्रवाद उन तक भी पहुँच गया था। शरद के दूर के रिश्ते के किसी भाई ने *यह तक कह डाला था—'शेफाली का प्रेमी विनय ही था,* किन्तु विवाह उसने शरद से कर लिया।" उसकी एक रिश्ते की चाची तो यह तक कह गई थी—अस्पताल में भी प्रेमलीला होती है। फिर आजकल की लड़कियों को नाटक रचना खूब आता है। आग लगे ऐसी जवानी में। शेफाली ने उनका यह स्वमेव-कथन सुन लिया था। चाची ने जो कुछ बोल उछाल दिये थे, उन्हें कई गुना बढ़ा-बढ़ा कर प्रसारित कर दिया गया था। और शेफाली को दोहरी पीड़ा हो रही थी।

डाक्टर शर्मा ने पेशेंट का तुरन्त ब्लड प्रेशर लिया। फिर पल्स देखी। डाक्टर सेन गुप्ता को बुलवाया गया। वे पहुँचते तब तक शरद ने एक बार खोजती हुई दृष्टि शेफाली पर डाली, वह कुछ अस्फुट स्वरों में बुदबुदाया और फिर एक दीर्घ निश्वास, और सब कुछ समाप्त ....डाक्टरों की भीड़ छट गई। कॉटेज-वार्ड की नर्स ने आगे बढ़कर शरद के मुख को ढक दिया। शेफाली ने एक मर्मांतक वेदना से पति की निर्जीव देह की ओर देखा, और उसके मुख से एक चीख निकल गई। जिस पुरुष ने अग्नि की प्रदक्षिणा कर उसकी मांग में सिंदूर भरा था, मंगलसूत्र पहनाया था और पत्नी की मर्यादा दी थी, वह अब नहीं रहा था। विवाहिता का रक्षा कवच अब उसे छोड़कर चला गया था। सदा-सदा के लिए।

फिर वही हुआ था, जो होता आया है चारों ओर विषाद, सहानुभूतियों का सिलसिला, शव यात्रा, सान्त्वनाओं के वे रेत के

महल। फिर धीरे-धीरे छटती हुई वह भीड़........उस भीड़ में उसके लिए खोया हुआ यह चेहरा। उस सब में गुम शेफाली। औपचारिकताएँ भी कभी-कभी मनुष्य को कितनी त्रासदी देती हैं, किन्तु उन सबके बीच था शांति और बल देने वाला एक स्वर, विजय का स्वर। "घबराओ नहीं शेफाली, तुम अकेली नही हो।" उसने कई बार धीरे से कहा था। और शेफाली उसे देखती रही थी। अपलक। उस हादसे के गुजरने से त्रस्त शेफाली।

घबराऊँगी क्यों? फिर अकेली कहाँ हूँ? उनकी इस लम्बी बीमारी में मैं कहाँ थी? कहते-कहते शेफाली ने कृतज्ञता से विनय की ओर देखा था। विनय ने धीरे से उसका कंधा छुआ था। किन्तु शेफाली ने विनय का हाथ हटा दिया था।

"हमारे साथ चलो शेफाली, जो कुछ हुआ है उसे भूल ही जाना बेहतर है। हाँ रिजाइन कर लो। नौकरी ही करना है तो वहाँ भी बहुतेरी है" शेफाली के पापा और मम्मी ने एक साथ कहा था। पर उनके साथ जाएगी शेफाली क्या? शरद के साथ विवाह करने के साथ उसने तो सदा-सदा के लिए वह घर छोड़ दिया है। इन्ही पापा और मम्मी ने ही तो कहा था—शरद या माँ-बाप का प्यार-दोनों में से एक को वह चुनले। और उसने शरद का ही वरण किया था। "नही-पापा मैं कहीं नही जाऊँगी। रिजाइन भी नही करूँगी, अपनी उसी दुनियां में लौट जाऊँगी। मैं और मेरे स्कूल के वे बच्चे, कई महीनों के बाद हमारा मिलन होगा" शेफाली बोली थी।

"इतने दिनो से विदाउट पे" चल रही है, फिर शरद के इलाज में भी कम खर्च नही हुआ होगा। यह कुछ रुपये रख लो"—कहते हुए मम्मी ने उसके हाथों में नोटों की एक गड्डी थमानी चाही थी। "नहीं

मम्मी। अभी जरूरत नहीं है। जब जरूरत होगी, कह दूंगी।"

"देखूंगी कब तक ऐसे रहेगी"—मां के स्वर में कटुता थी, और आंखों में वही पुराना दर्द।

शेफाली ने उस बात का कोई जवाब नहीं दिया था। पिछले दो दिनों से शेफाली विनय से कतराती रही है। जब-जब विनय ने बात छेड़नी चाही है। वह टालती रही है "विनय ने निश्चय किया है आज वह अवश्य मन की बात शेफाली से कह देगा। अब और प्रतीक्षा वह नहीं करेगा। उस रात का वह एकांत....हां वही एकांत उन्हें पहली बार मिला था। शेफाली कमरे में बैठी थी। आंखों के सामने एक पत्रिका के पृष्ठ फैलाए। और विनय उसके ठीक सामने, सोफे पर, शेफाली पर दृष्टि गड़ाये उसके सिर पर दीवार पर शरद की फोटो पर सूखी माला अब भी झूल रही थी, जिसे उसने एक हफ्ता पहले ही पहनाया था।

"मेरी बात सुनो शेफाली, तुम आधुनिक हो, और सुशिक्षित भी। अपनी इस विडंबना से तुम्हें स्वयं को उबारना ही होगा। मैं चाहता हूं..........आगे के शब्द विनय के मुंह से नहीं निकल पाए।

शेफाली ने पत्रिका बन्द कर दी। फिर व्यर्थ ही उठाकर किचन में जाकर एक गिलास पानी पिया। पर्दा उठाकर टेरेस पर आ खड़ी हुई पीछे आहट हुई, देखा विनय था।

इस तरह स्वयं से कब तक भागोगी शेफाली ? तुम्हारा पति ही नहीं, मेरा सबसे अजीज दोस्त था। तुम उसकी पत्नी ही नहीं, मेरे अत्यन्त निकट भी। तुम्हें इस स्थिति में जीते हुए और अधिक नहीं देख सकता। फिर यह पिछले ढाई-तीन वर्ष। इनके बाद की जिन्दगी तो कई गुनी लम्बी है उसे तो सार्थक बना सकती हो।

"शेफाली तुम्हें अपनाना चाहता हूँ शेफाली। तुम से विवाह कर लूंगा। शरद के अभाव को कभी भी खलने नहीं दूंगा। बस तुम हाँ कर दो, शेफाली ?" कहते-कहते विनय ने शेफाली को आलिंगन में ले लिया। शेफाली ने विरोध नहीं किया। कुछ क्षण ऐसे ही बीत गये............

"कुछ तो कहो शेफाली।"—विनय के स्वर में अनुनय था, आंखों में एक जिज्ञासा और वह जिज्ञासा अब धीरे-धीरे एक हिंस्र भाव में परिवर्तित हो रही थी। विनय का आलिंगन उसे कसता जा रहा था।

शेफाली ने स्वयं को मुक्त कर लिया। विनय बुत बना खड़ा रहा। अत्यन्त शांत फिर "क्या तुम मुझे नहीं चाहती" उसका वह प्रश्न शेफाली को भीतर तक बेध गया।

शेफाली सच ही क्या विनय को नहीं चाहती ? इस प्रश्न की अनेक प्रतिध्वनियाँ उसकी चेतना में गूँजने लगी। फिर उसने कहना चाहा—मैं जानती थी, तुम यही सब कहोगे अपने मित्र के लिए ? तुम यह सब कर सकते हो। पर क्या सचमुच अपने मित्र के लिये तुम्हारा अपना स्वार्थ ? किस प्रेरणा से तुम मेरे साथ पिछले छः महीनों से बन्धे रहे हो ? किन्तु शेफाली ने कुछ कहा नहीं।

"शरद को गये हुये सिर्फ आठ ही दिन तो हुए हैं उसने मन ही मन हिसाब लगाया।"

"तुमने मेरी बहुत मदद की है विनय अब बहुत हुआ। तुम कल ही चले जाओ। तुम्हारा काम भी काफी सफर हुआ है" कहते-

कहते शेफाली ने विनय का हाथ अपनी मुट्ठी में ले लिया। फिर दूसरे ही क्षण उसे मुक्त कर दिया।

वे अत्यन्त निकट खड़े थे, किन्तु शेफाली को लगा, उनके बीच एक नदी बह रही है, जल की नहीं—पिघले कोलतार की नदी। फिर उसमें एक कमल उग आया है रक्त कमल, धीरे-धीरे काला पड़ता जा रहा है। नदी के जल की तरह..................

□□

अब और नहीं

निशा आँख बन्द किये कब से अकेली चारपाई पर लेटी है। यह अकेलापन कभी-कभी निशा को भीतर से बहुत तोड़ने लगता है। अब दीप्ति घर में नहीं रहती, इस एकान्तता का बोझ बढ़ता ही जाता है।

आज भी निशा के साथ यही हुआ है। निशा अकेलेपन को सह नहीं पा रही है। क्यों पुरानी बीती स्मृतियां और बीते हुए जीवन के वे सन्दर्भ जैसे किसी कल्पना में साकार होने लगे हैं, जिन्हें निशा भुला देना चाहती है। किन्तु जैसे अतीत वर्तमान बनकर सामने आ जाता है। एक दो बार दृढ़ निश्चय किया है निशा ने, वह उस अतीत को वर्तमान में नहीं प्रवेशने देगी। किन्तु असफल हो जाती है निशा, अपने उस प्रयास में। शायद निशा को सुख मिलता है वह सब दोहराने में पीड़ा से आपूरित सुख। किसी पुराने जख्म में खरोंच लग जाने से जैसा अहसास होता है। कुछ जख्म भर जरूर जाते हैं किन्तु उनकी यादें ताजी बनी रहती हैं।

जाड़े की रात जल्दी घनी हो जाती है। आठ बजते-बजते अंधेरा फैलने लगता है, फिर एक घनीभूत नीरवता। इस कालोनी के लिए यह स्थिति अधिक अनुकूल ही जाती है। मैन रोड से दूर तक जाती हुई बाइलेन जहाँ खत्म होती हैं, निशा वहीं रहती है। सड़क जरूर बन गई है, लेकिन स्ट्रीट लाइट नहीं है। कालोनी ठीक से डेवलप नहीं हुई है, न म्युनिसिपैल्टी ने उसे अभी टेकओवर ही किया

पहले शेफाली ने विनय का हाथ अपनी मुट्ठी में ले लिया। फिर दूसरे ही क्षण उसे मुक्त कर दिया।

वे अत्यन्त निकट खड़े थे, किन्तु शेफाली को लगा, उनके बीच एक नदी बह रही है, जल की नहीं—पिघले कोलतार की नदी। फिर उसमें एक कमल उग आया है रक्त कमल, धीरे-धीरे काला पड़ता जा रहा है। नदी के जल की तरह.....................

□□

अब और नहीं

निशा आँख बन्द किये कब से अकेली चारपाई पर लेटी है। यह अकेलापन कभी-कभी निशा को भीतर से बहुत तोड़ने लगता है। अब दीप्ति घर में नहीं रहती, इस एकान्तता का बोझ बढ़ता ही जाता है।

आज भी निशा के साथ यही हुआ है। निशा अकेलेपन को सह नहीं पा रही है। क्यों पुरानी धीमी स्मृतियां और बीते हुए जीवन के वे सन्दर्भ जैसे किसी कल्पना में साकार होने लगे हैं, जिन्हें निशा भुला देना चाहती है। किन्तु जैसे अतीत वर्तमान बनकर सामने आ जाता है। एक दो बार दृढ़ निश्चय किया है निशा ने, वह उस अतीत को वर्तमान में नहीं प्रवेशने देगी। किन्तु असफल हो जाती है निशा, अपने उस प्रयास में। शायद निशा को सुख मिलता है वह सब दोहराने में पीड़ा से आपूरित सुख। किसी पुराने जख्म में खरोंच लग जाने से जैसा अहसास होता है। कुछ जख्म भर जरूर जाते हैं किन्तु उनकी यादें ताजी बनी रहती हैं।

जाड़े की रात जल्दी घनी हो जाती है। आठ बजते-बजते अंधेरा फैलने लगता है, फिर एक घनीभूत नीरवता। इस कालोनी के लिए यह स्थिति अधिक अनुकूल हो जाती है। मैन रोड से दूर तक जाती हुई बाइलेन जहां खत्म होती हैं, निशा वहीं रहती है। सड़क जरूर बन गई है, लेकिन स्ट्रीट लाइट नहीं है। कालोनी ठीक से डेवलप नहीं हुई है, न म्युनिसिपैल्टी ने उसे अभी टेकओवर ही किया

है। निशा अंधेरे में देख रही है उस तंग सड़क के किनारे खड़े गुल-मोहर को, जो ऊँघता सा दिखाई देता है। आसपास दूर-दूर बने हुए मकानों की खिड़कियों को झांकता हुआ प्रकाश उनके आकार को तनिक उजागर कर रहा है।

दीप्ति के कालेज में एन्युवल फंक्शन चल रहा है। आज म्यूजिकल नाइट है। दीप्ति भी आएगी। कितना कहा था दीप्ति ने। मम्मी तुम भी चलो न, सच बड़ा मजा रहेगा। यह मेरा फाइनल इयर है, कालेज तो अब छूट ही जायेगा किन्तु निशा गई नहीं। इन सब में उसकी अब कोई दिलचस्पी नहीं है। फिर ऐसे ही एक आयोजन से उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना जुड़ी है। जाने पर मन में वह सब जाग उठता है जो अचेतन मे सोया रहता है।

दीप्ति को लेने अजय आया था, उसका सहपाठी। "आन्टी चलिए न" अजय ने अपना आग्रह दोहराया था। फिर दीप्ति को साथ लेकर अजय निराश सा चल दिया था। निशा उन दोनों को मेन रोड तक जाते हुए देखती रही थी। न जाने खड़े-खड़े यों ही कितना समय गुजर गया था। अजय को लेकर एक स्वस्थ भाव निशा के मन मे उदय होता है। बड़े घर का लड़का है अजय, पिता व्यवसाय के लिए अक्सर बाहर रहते हैं जो कलकत्ता और बम्बई जैसे महानगरों में फैला हुआ है। कोठी और कार सभी कुछ है, अजय के पास। अजय कला-पारखी है। दीप्ति के संगीत के मिठास ने अजय को अत्यन्त आकर्षित किया है। यों दीप्ति का विषय म्यूजिक नहीं है, किन्तु संगीत कला उसे अपनी मम्मी से विरासत में मिली है। संगीत की प्राथमिक शिक्षा निशा ने ही उसे दी है। अब भी निशा स्वयं बैठकर उसके साथ अलाप लेती हुई रियाज कराती है। संगीत ही नहीं,

निशा के संरक्षण में दीप्ति को वे शुभ संस्कार मिले [illegible] किसी युवती के व्यक्तित्व को संवारते हैं, उसे अभिजात्य [illegible] करते हैं। अजय दीप्ति में रुचि लेता है, निशा जानती है। दीप्ति के सपने और आकांक्षाओं की प्रतीति भी है उसे।

अजय को लेकर निशा के मन में एक संकल्प उपजता है शायद वह घडी निकट आती जा रही है जिसकी प्रतीक्षा वह वर्षों से करती रही है अजय को दीप्ति को सौंप कर वह सचमुच निश्चिन्त हो सकती है। यदि ऐसा हो जायेगा, दीप्ति की कला और प्रतिभा भी नहीं मरेगी, जैसा स्वयं निशा के साथ घटित हुआ है। अपने निश्चय को निशा ने दीप्ति के सामने प्रकट भी कर दिया है, किन्तु दीप्ति प्रतिरोध करती है "नहीं मम्मी, मैं तुम्हें छोडकर कही भी नही जाऊंगी, किसी के साथ नही। जिस मम्मी ने मुझे पापा और मम्मी दोनों का प्यार दिया है, स्वयं को मिटाकर मेरे व्यक्तित्व का निर्माण किया है, मै अपनी इतनी अच्छी मम्मी की जीवन भर सेवा करूंगी। उन्हें सुख पहुंचाऊंगी।" और सुनते सुनते निशा मुग्ध भाव से दीप्ति की ओर देखती रहती है। उसे छाती से चिपका लेती है और सोचती है", निशा ऐसा कभी हुआ है पगली। बेटी सदा पराये घर के लिए होती है। उसे भी बाप का घर छोडकर अपने पति के घर जाना ही पड़ता है। यही उसकी नियति है, और समाज का नियम। इसे कैसे तोड़ा जा सकता है ? फिर मेरे साथ तो कुछ भी विशिष्ट नहीं है। तू एक साधारण स्कूल टीचर की बेटी है, ऐसी माँ की बेटी जिसे अभावों और अवमानना के सिवाय कुछ भी तो नही मिला है।" दीप्ति के अभिजात्य सौन्दर्य और संस्कार को देखकर निशा की चिन्ता और भी बढ़ जाती है।

निशा भूल नही पाती, ऐसी ही चिन्ता निशा को अपने पापा को रहती थी। अपनी माँ को निशा ने बचपन में ही खो दिया था। पापा को संगीत बेहद पसंद था। कोई बेटा नहीं था उनका, किन्तु, निशा को ही बेटा मानकर उन्होने ऊंची शिक्षा ही नहीं दिलाई थी, उसे विधिवत संगीत भी सिखाया था। निशा के गुण और कला पर मुग्ध हो गया था एक युवक नगर के सर्वोच्च अधिकारी अर्थात जिलाधीश का पुत्र। पिता (डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर ही नहीं, बहुत बड़ी) पुश्तैनी जमींदारी के स्वामी भी थे। शादी और दुश्मनी बराबरी वालों में ही होती है, वे मानते थे। मामूली हैड क्लर्क की पुत्री उनके घर की बहू कैसे बन सकती थी? और निशा की सारी गुण-सम्पदा व्यर्थ हो गई थी इस राजकीय वैभव के सामने। निशा के पापा ने एक बार प्रयत्न किया था। स्वयं जाकर, किन्तु उन्हें अपमानित होकर ही लौटना पड़ा था। और उनका इन्जीनियर बेटा अनिल इसका प्रतिवाद भी नही कर सका था।

उस ऐश्वर्य को छोड़कर निशा के पार्श्व मे आ खड़े होने की न उसमें शक्ति थी, न साहस। अपने परिवार की मान-मर्यादा निशा के प्यार से उसे कहीं ऊंची लगी थी। और शीघ्र ही उसका मोह भंग हो गया था। किन्तु निशा नही भुला पाई थी वह किशोर मन का प्रेम। अनिल के साथ बीते हुए वे क्षण, केवल भावुकता के कारण नहीं थे। उसके जीवन के किसी अन्तरंग से वे सदा-सदा के लिए अनजुड़े थे। निशा ने आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय भी किया था, किन्तु वह उस संकल्प की रक्षा नही कर पाई थी। पापा के आँसुओं की कातरता ने उसकी दृढता को पिघला दिया था। अपनी आत्मा की समस्त शक्ति जुटाकर उसने विवाह कर लिया था। अपने पापा के ही निकटतम मित्र के पुत्र शिशिर से। ऐसा कर उसने पापा की चिन्ता ही

दूर नहीं कर दी, उनकी प्रतिष्ठा की रक्षा भी की थी। अपने पति के साथ गृहस्थी आरम्भ कर निशा सम्पूर्णतया उसमें डूब जाना चाहती थी। शिशिर धनाढ्य नहीं किन्तु उदार हृदय शिक्षित व्यक्ति था। साधारण स्कूल टीचर होने पर भी उसमे संस्कारिकता थी और थी मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था। प्रखर बुद्धि की धनी और कला-निपूर्ण निशा ने शिशिर को मन से स्वीकार कर लिया था। चार पाँच वर्ष इसी प्रकार सुख और परितोष में बीत गये थे। दीप्ति के आगमन से वह सुख और परितोष कई गुना बढ गया था।

किन्तु निशा का वह सुख और परितोष स्थायी नही रह सका था। भयंकर रेल दुर्घटना मे शिशिर उसे और नन्ही मुन्नी दीप्ति को सदा-सदा के लिए छोडकर चला गया था। विधाता की इस क्रूरता ने निशा को सचमुच भीतर मे बहुत अधिक तोड दिया था। किन्तु वह जरा भी विचलित नही हुई थी। दीप्ति के निर्माण में उसने स्वय को पूरी तरह विसर्जित ही कर दिया था। संघर्परत निशा के बाहर और भीतर शून्य ही शून्य भर गया था। श्रम और संयम ने उसके नारीत्व को अत्यन्त कठोर बना दिया था। उसके कातियुक्त चेहरे पर तपस्या और त्याग की छाप स्पष्ट अकित हो गई थी। सामान्य रहन-सहन मे वह असाधारण प्रतीत होती थी। निशा के व्यक्तित्व की यह असाधारणता पाकर दीप्ति का व्यक्तित्व भी मृदुता के साथ-साथ असाधारण रूप से दीप्त हो उठा था।

अजय और दीप्ति। क्या एकात्म हो सकते हैं? निशा को बार-बार यह विचार मथ रहा है। अजय ने अपने सौम्य तथा स्नेहिल व्यक्तित्व से दीप्ति का ही नही स्वयं निशा का भी विश्वास अर्जित कर लिया

है। तथा मुक्तता से वह दीप्ति को अजय के साथ भेज देती है। आज भी ऐसा ही हुआ है।

निशा घर के बाहर गाड़ी रुकने की आवाज सुनती है। दीप्ति और अजय लौट आए हैं। अजय उसे प्रणाम कर गाड़ी स्टार्ट कर चला जाता है। इस सब से प्रसन्न है दीप्ति।

"कैसा रहा तेरा प्रोग्राम?" खाना मेज पर लगाते लगाते निशा पूछती है।

"बहुत अच्छा ममी" उसी प्रसन्न भाव से दीप्ति उत्तर देती है। सब बड़ा मजा आया, आप साथ चलती तो और भी मजा आता। 'कहती है दीप्ति।" और ममी बता सकती हो, आज मैं किससे मिली थी—"दीप्ति के कथन में उत्साह का अतिरेक है।"

"मैं क्या जानूं?" निशा उसी प्रकार व्यस्तता बनाए रखती है।

"आज अजय के पापा भी आये थे फंक्शन में।" अनिल वर्मा—विदेश से परसों ही लौटे है। जब फंक्शन के बाद मुझे अजय ने मिलवाया, वे बड़े खुश हुए। आपसे भी कहा शाम को मिलने आयेंगे। दीप्ति खाना खाते-खाते बताती है। सुनकर निशा चौंक पड़ती है।

"क्या नाम बताया दीपा तूने?" निशा का कौर हाथ ही में रुक जाता है।

"अनिल वर्मा, बड़े नामी इन्जीनियर है।" वर्मा इण्डस्ट्रियल कार्पोरेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर। मैं उनके घर होकर आ रही हूं। बड़े ठाट से रहते हैं वे लोग। दीप्ति उत्साहपूर्वक कहती है।

सुन कर निशा की सारी उत्सुकता समाप्त हो जाती है। वह खाना बन्द कर हाथ धो लेती है। फिर किसी दृढ़ता से खिड़की के उस पार शून्य में देखने लगती है।

अनिल वर्मा-नामी इन्जीनियर, वर्मा इण्डस्ट्रियल कार्पोरेशन के डायरेक्टर—निशा इस व्यक्ति को जानती है। अच्छी तरह जानती है। पच्चीस वर्ष पहले का वह इतिहास उसे खूब याद है आज भी। इस व्यक्ति का पूर्व इतिहास जिसने अपने सामंती विचारों से जकड़े हुए पिता का समर्थन ही किया था। बबूल के वृक्ष में आम नहीं फलते—निशा जानती है।

आज दीप्ति कालेज से जल्दी आ गई है। प्रिपेरेशन लीव शुरू हो गई है, शायद तभी तो। पर इतनी गम्भीर क्यों है दीप्ति। क्या बात है बेटी, इतनी सीरियस क्यों हो? पूछती है निशा।

"कुछ नहीं मम्मी"—दीप्ति के स्वर में बेहद उदासी है।

"फिर भी, कोई बात जरूर है" निशा कहती है।

"तुम्हें बताऊंगी ममी, जरूर बताऊंगी। क्या सभी बड़े लोग एक से होते हैं ममी?" दीप्ति पूछती है।

"हां बेटी, सभी बड़े लोग एक से ही होते हैं। अपने दर्प और दम्भ में वे सभी मनुष्यता को भूल जाते हैं।" निशा कहती है।

आज ममी अजय ने क्या कहा—कैसे बताऊं मम्मी? सुन सकोगी तुम दीप्ति का स्वर विषाद से भीग उठता है।

"बताने की जरूरत नहीं बेटी। मैं समझती हूं। सब समझती हूं—निशा दीप्ति को अपने अंक में ले लेती है।

दीप्ति स्वयं को अलग कर लेती है।

"मम्मी आज टेरेस पर ही सोयेंगे, हैं न ?" दीप्ति बच्चों की तरह पूछती है।

हां बेटी, बड़ी घुटन लग रही है। ऊपर खुली हवा तो मिलेगी। निशा को अपना स्वर भी अपरिचित सा लगने लगता है—बिलकुल अपरिचित।

हारे मन की लड़ाई

अमिता को लगा, कपूर साहब के यहाँ आज फिर कोई पार्टी है। हंसी के कहकहे, स्त्री-पुरुषों की मिली-जुली आवाजें और उनके अस्फुट संवाद और किसी पश्चिमी संगीत के केसेट की तेज-तेज ध्वनियाँ जब तब हवा में तैर जाते हैं और उनकी आवृत्तियाँ अमिता सुन रही है। जैसे उसके प्रत्येक रोम में कोई सुप्त व्यग्रता जग रही है। एक मद्धम सी आँच उसके भीतर कहीं सुलगने लगती है। राख की पर्तें हटाकर जैसे कोई चिनगारी चमक उठी हो। निरन्तर आक्रान्त और भग्न होती हुई अमिता उन स्मृतियों का एक-एक सूत्र पकड़ रही है।

अमिता को याद आ जाता है, आज 20 मई है। अभी-अभी इसी गली में एक बारात निकली है। बैण्ड बाजे की किसी फिल्मी गीत पर बजती धुन, आतिशबाजी, ट्विस्ट और पैसों की बौछार, सब कुछ को ठीक एक वर्ष पूर्व के अतीत में ले गया था। उसके अपने घर में ही उस दिन ऐसा ही उत्फुल्ल वातावरण था। मांगलिक वातावरण, एक खुशी जिसे बारह बरस बाद उसने देखा था। चट्टान की पर्तों पर नई आशाएं उस दिन अंकुराई थीं। शादी का भीड़-भड़ाका था, शोर-शराबा और मेहमानों से भरा हुआ घर। अमिता के एक मात्र बेटे अरुण का विवाह था। एक विचित्र उत्साह था। उसके भारी मन में ममत्व फिर कहीं जागा था। मातृोचित वात्सल्य फिर छलक आया था।

विवेक इन्दु की शादी कर गये थे। मौत के पहले। अरुण

की जिम्मेदारी सौंप गये थे अपनी पत्नी अमिता को। दस बारह वर्ष का ही तो था अरुण। विवेक की आकस्मिक मृत्यु के बाद अमिता ने टीचरशिप की है, ट्यूशनें की हैं। अपने बेटे को डाक्टर बनाया है। इन्दु की शादी में लिया हुआ कर्ज चुकाया है और मकान की किश्तें दी हैं, जिसे विवेक किसी तरह जुटा पाया था। पिछले बारह वर्ष यही सब तो करती रही थी अमिता। पति की मृत्यु के बाद उस अंधेवन को पार करने के लिए वह कृतसंकल्प थी। एक ऐसा वन जिसमें सिर्फ अंधेरा ही नहीं था, कटीली झाड़ियाँ थी, वन पशु थे मनुष्य के रूप में, जो अमिता को क्षत-विक्षत कर डालना चाहते थे। किन्तु अत्यन्त संतुलित बनी रही थी अमिता। अपनी भरपूर जीवन-शक्ति की निरन्तरता लिये हुए। विवेक को लन्ज कैंसर था जो बड़ी लेट स्टेज में 'डायग्नोस' हो पाया था। काफी देर हो चुकी थी। इलाज में अमिता ने जो कुछ पास था, खर्च कर दिया था। अपने आभूषण तक बेच दिये थे। किन्तु सब कुछ दाव पर लगा कर वह लड़ाई हार गई थी।

फिर उस दिन, मृत्यु के सिर्फ एक दिन पहले विवेक ने कहा था "मैं अरुण को डाक्टर बनाना चाहता था पर लगता है जिन्दगी अब साथ छोड़ रही है। मैं अपनी यह इच्छा पूरी नहीं कर पाऊंगा। और तुम अकेली, कैसे सब कुछ करोगी? इन्दु की शादी का कर्ज कैसे निबटाओगी? यह मकान क्या बचा सकोगी?" विवेक के स्वर में एक अद्भुत व्यथा थी। उसका पीला मुंह करुणा से और आंतरिक पीड़ा से अधिक पीला लगने लगा था अमिता को। हल्दी का पीला जर्द। फिर विवेक तकिए के सहारे लुढ़क गया था। निस्तेज और निढाल। "अरुण जरूर डाक्टर बनेगा। आपकी यह इच्छा पूरी होगी। पहले आप तो ठीक हो जाइए।" अमिता यह सब कुछ कहने

का साहस किसी प्रकार जुटा सकी थी । फिर वही घटित हो गया था, जो सर्वथा अप्रत्याशित नहीं था । पति-शोक से संत्रप्त अमिता ने बारह दिन किसी तरह बिता दिये थे । मातम-पुरसी का रस्म के बाद एक-एक कर सभी परिजन चले गये थे ।

इन्दु अपनी ससुराल को विदा हो थी । रह गई थी अमिता और उसके चारों ओर एक शून्य । एक अनिर्णीत उदासीनता । एक ऐसी रिक्तता जिसे भरने की सामर्थ्य किसी में न थी । कितनी अशक्त, शलभ और सीमित रह गई थी अमिता ।

किन्तु अमिता ने स्वयं को उस हाहाकार से शीघ्र मुक्त कर लिया था । अमिता ने संकल्प लिया था अरुण को डाक्टर बनाने का । यही तो चाहता था विवेक । उसकी अन्तिम इच्छा । अमिता का एकमात्र संकल्प । अरुण डाक्टर बनेगा । जरूर बनेगा अरुण डाक्टर । किन्तु विवेक की अन्तिम इच्छा उसका अपना संकल्प और उस संकल्प की पूर्ति । इसके बीच जो एक बहुत बड़ा फासला था । कैसे तय होगा यह फासला ! मेडिकल कालेज में दाखला, उसकी फीस पुस्तकों का खर्च । पाँच वर्ष का लम्बा अन्तराल । संक्रमण और संक्रान्ति का यह पूरा युग अमिता पार कर गई थी । वह सब देखते-देखते बीत गया था । सर्वथा मायाचित । एक संकल्प के सहारे अमिता ने बारह वर्ष बिता दिये थे । इन बारह वर्षों में एक नया जाला बुन गया था ।

स्मृतियों का एक नया सूत्र पकड़ती है अमिता । कैसी थी वह शाम अनागत का विश्वास दिलाने वाली शाम । अरुण ने 'टाइम्स' लाकर अमिता को दिखलाया था । फाइनल एम. बी. बी. एस. का परीक्षाफल छपा था । "मैं पास हो गया मम्मी । तुम्हारा अरुण डाक्टर बन गया ।" फिर विवेक के दीवार पर टगे हुए फोटो के सामने वह

उसे लिए आ खड़ी हुई थी। "सुना आपने अपना अरुण डाक्टर बन गया।" फिर एक अस्फुट सिसकी, आँखों में बहता हुआ खारा जल, जो रुकने का नाम ही नहीं लेता था। अमिता बड़ी कठिनाई से स्वयं को नार्मल कर पाई थी।

एक और चित्र आता है। अमिता की स्मृति में—"मुझे अपाइंटमेंट मिल गया है मम्मी! अब तुम न टीचरशिप करोगी और न ट्यूशनें। इस पहली तारीख से सब बन्द। यह देखो अपाइंटमेंट लेटर।" अरुण ने दुलार से माँ के गले में दोनों बाहें डाल दी थी। "अब बस भी कर" अमिता ने स्वयं को छुड़ा लिया था। नहीं करूंगी टीचरशिप और ट्यूशन पर पहले जोइन तो कर। फिर तेरा घर बसा दूँ। तभी निश्चित हो सकूंगी।" अमिता ने कहा था।

अरुण ने अपनी नौकरी ज्वाइन कर ली थी, दूसरे शहर में। अमिता ने न रिजाइन किया था, और न ट्यूशनें ही छोड़ी थी। यह सब करती भी कैसे अमिता ?

अरुण का पत्र आया था। आपने मेरा घर बसाने की चिन्ता व्यक्त की थी मम्मी। लो, उसका अवसर भी आ गया है। वर्मा साहब मुझ में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं। पूरा नाम दीनानाथ वर्मा। उनकी बेटी है दीपाली। डाक्टर दिपाली। मेरी कलीग हैं। वर्मा जी आपको प्रपोजल भेज रहे हैं। लड़की मुझे पसन्द है। आपको भी पसन्द आएगी। आप मना न करना मम्मी।" अरुण का पत्र अत्यन्त संक्षिप्त था। उत्तर भी संक्षिप्त भेज दिया था अमिता ने। "तुझे पसन्द है तो मुझे भी पसन्द है। वैसे भी यह समय है, तू शादी करले फिर जिन्दगी तुम दोनों को ही बिताना है।" फिर शेष औपचारिकताएं पूरी हो

गई थी। धूमधाम से ग्ररुण और दीपाली का विवाह हुग्रा था। ग्रमिता जान गई थी ग्ररुण के ससुर लखपति ग्रादमी थे। कोठी और कार, सब कुछ उसके पास था। दीपाली इनकी इकलौती बेटी थी। क्या कुछ नहीं दिया विवाह में उन्होंने दीपाली को ? जो कुछ शेष था सब उसका ही था। फिर ग्रमिता न जाने क्यों लौट ग्राई थी अपने इसी घर में।

वह कैसी विवशता थी, नियति की कौनसी क्रूरता ? एक शून्य होता है जो कभी भरता ही नहीं। वास्तविकता में लौटना ही पड़ता है मनुष्य को। मोह भंग की यह स्थिति कितनी ग्राक्रामक थी। ग्ररुण और दीपाली ग्रपना क्लिनिक खोल रहे थे। वर्माजी वाली कोठी में। ग्ररुण ग्रब ग्रपना दो कमरे और किचिन वाला फ्लैट खाली कर वहीं रहेगा। मम्मी भी वहीं शिफ्ट हो जायेगी। यह निर्णय बेटे और बहू का था, उसका नहीं। वह ग्रपना निर्णय देती तो मानता भी कौन ? फिर एक शून्य, एक व्यथा, एक यातना। ग्रपने घर लौट ग्राने का निर्णय ग्रमिता को ग्रधिक शान्तिप्रद लगा था। पति का बिछोह, लम्बा वैधव्य और धन का ग्रभाव, चारों ही तरफ ग्रभाव और ग्रपूर्णताएँ। मनुष्य कितना बदल जाता है। चकित थी ग्रमिता, सब कुछ भूल जाता है मनुष्य। बेटा और बहू ग्रमिता को स्टेशन पर बिदा करने ग्राये थे।

"ग्रापने हमारा ग्रनुरोध नहीं माना पर वहाँ मन न लगे तो मम्मी कभी भी ग्राप यहाँ ग्रा जाना हमें खुशी होगी।" ग्ररुण ने कहा था। "फिर हम ग्रापको किसी प्रकार की कमी महसूस नहीं होने देंगे। मम्मी जी ग्राप किसी प्रकार की चिन्ता न करें" यह स्वर दीपाली का था।

"मुझे कोई कमी कभी नहीं होगी बहू। मुझे स्वयं पर पूरा भरोसा है।" कहते कहते न जाने कौनसी कठोरता अमिता के स्वर में आ गई थी।

वर्मा और श्रीमती वर्मा ने विदाई का रात्रि भोज देने की औपचारिकता निभाई थी। वर्मा जी ने अमिता से कहा था—"अरुण बहुत कुशल डाक्टर है बहन जी। हमारी इच्छा इसे स्टेट्स भेजने की थी अब वह एम. एस. वहीं जाकर करेगा। पास पोर्ट और वीसा वगैरह सबकी तैयारी मैंने शुरू कर दी है। और फिर आप यह मत भूलिये, अमेरिका से लौटने पर यहां उसकी प्रेक्टिस बहुत अच्छी चलेगी। यदि आप चाहें उन दिनों आप यहाँ आकर रह सकती हैं। और आप तो जानती ही हैं, दीपाली अकेले क्लीनिक चलायेगी, तो उसे आपके पास आने की फुरसत ही नहीं मिलेगी। अमिता को सुनकर आघात लगा था। अरुण ने तो यह सब नही बताया था। शायद उसने यह बताना जरूरी नही समझा था।

रास्ते भर अमिता द्रवित बनी रही थी और सवेदनशील। पूर्व विस्मृतियों से आन्दोलित।....

दो महीने की विदाउट पे लीव अवेल कर जब अमिता अपने स्कूल मे पहुंची थी तो सबको देख कर विस्मय ही हुआ था। पुरानी ट्यूशनें उसे फिर मिल गई थीं। अब अमिता है और उसकी टीचरी है—ट्यूशनें है।

व्यस्त रहती है अमिता। अब एक और चीज है अमिता के साथ, वह है उसका स्वाभिमान। अब वह बिल्कुल अकेली है,

अपनी ओर अकेली । फिर भी स्मृतियों के दंश अमिता को अकेल नही रहने देते । तब अकेलापन दुश्छाया बन कर पूरी तरह उसे आवृत कर लेता है'। किन्तु युद्धरत है अमिता, एक ऐसा युद्ध जो कभी समाप्त नहीं होगा । स्वयं से लड़ना कितना कठिन होता है ।.... ...

□

सम्बन्ध

आज सुबह से ही अतिरिक्त उत्साह और प्रसन्नता से भरा हुआ है रोहित का मन। ब्रेक फास्ट भी बहुत जल्दी उसने खत्म किया है। पत्नी ने बार-बार रोका था 'इतनी जल्दी क्या है ? आदमी ढंग से खाये-पिये तो—पर रोहित को आज जैसे इस सबके लिए अवकाश ही न था।

"तुम नहीं जानती शुचि, मैं सचमुच आज कितना खुश हूँ। पहली बार प्रिया जीजी हमारे यहाँ आ रही हैं। इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा हमारा ?"

पर शुचि ने बीच ही में रोक कर कहा था, सो तो मैं जानती हूं कि आज तुम्हारी प्रिया जीजी आ रही है। हमेशा ही तुम्हारे कोई न कोई रिश्तेदार आते रहते हैं। यह कोई नई बात नहीं है।

रोहित ने कहना चाहा था—इन प्रिया जीजी की बात ही कुछ और है। वे उनकी रिश्तेदार मात्र कहां हैं ? रोहित के लिए तो माँ जैसी है प्रिया जीजी। मौसेरी बहन सही, लेकिन सगी बहन से भी ज्यादा माँ की तरह पूज्या। रोहित ने तीन चार वर्ष की आयु में ही अपनी माँ को खो दिया था। मौसी ने ही उसकी परवरिश की थी। फिर वह आठ साल का ही था कि मासी भी नहीं रही थी। माँ और के अभाव की पूर्ति की थी इन्हीं प्रिया जीजी ने। अगर वह न होती तो ?

तो क्या होता, रोहित के लिए यह कल्पना करना बड़ा भयावह है उन्हीं ने उसे पढ़ाया-लिखाया था उसे संस्कार दिये थे। और उन्हीं की साधना के फलस्वरूप वह आज इतने उच्च पद पर आसीन था।

प्रिया जीजी का अपना कोई बेटा न था। एक बेटी थी जिसका ब्याह कर वे निश्चिन्त हो गयी थी। पति शिक्षा विभाग में साधारण शिक्षक थे। अपने सीमित साधनो के बावजूद उन दोनों ने रोहित को अपनी आंखों से ओझल नही होने दिया था। और उसके पिता जैसे प्रिया को उसे सौंप कर माँ और पिता दोनों के उत्तरदायित्व से मुक्त हो गये थे। उन्होंने अनेक बार कहा था—"मैं तो यही सोचता हूं तुम पिछले किसी जन्म में जरूर इसकी माँ रही होगी।"

रोहित को वह सब कुछ याद था। उसे यह घटना भी याद है—बचपन में घर की छत पर आंख-मिचौनी खेलते-खेलत एक दिन मुंडेर से नीचे गिरा था। प्रिया ने ही उसे गोद में उठाया था, फिर उसी हालत में रोती हुई वे अस्पताल ले गयी थी उसकी साड़ी रक्त में भीग गयी थी, जिसे देखकर वे बुरी तरह डर गयी थी। और फिर प्रिया जीजी ने उसकी देखभाल में रात-दिन एक कर दिया था। जब तक—वह पूरी तरह ठीक नहीं हो गया था। प्रिया जीजी के इन सब उपकारों का कोई मूल्य चुकाया जा सकता है क्या?

"ट्रेन तो शायद छह बजे आती है न, तब तक तो आफिस के काम में मन लगाना। यह नहीं कि अपनी प्रिया जीजी के ख्याल में होश-हवास ही खो दो।" दफ्तर जाते-जाते शुचि ने सीख दी थी। फिर दफ्तर से ही रोहित ने उसे टेलीफोन किया था, क्यों न वे दोनों ही प्रिया को लेने स्टेशन जाये? पर सुचि ने साफ इनकार कर दिया था। नीलू और जया दोनों ही स्कूल से पांच बजे आते हैं। उन्हें

मुंह-हाथ धुलाकर चेंज कराकर खाना-पीना यह सब उसे ही करना पड़ता है। फिर आया भी इन दिनों घर में नहीं है।

"हम दोनों को स्टेशन पर देखकर जीजी बहुत खुश होतीं। उन्हें सचमुच बड़ा अच्छा लगता। तुम भी चलती तो—"एक अनुनय था उसके स्वर में। तभी शुचि ने फोन रख दिया था।

सवा छह बजे शुचि ने सारी तैयारियां कर ली थीं तथा डिनर सेट और नयी क्राकरी किचन में पहुंचा दी थी। डाइंग साफ कर सोफे के कवर और टेबल क्लाथ बदल दिये गये थे। गेस्ट रूम की खिड़की और दरवाजे पर नये पर्दे लगाकर व्यवस्थित कर दिया था। कूलर आन था, फिर इम्पोर्टेड साडी पहनकर सेंट की भीनी-भीनी सुगन्ध से उसने स्वयं को सुवासित कर लिया था। वह प्रिया के सामने अपना पूरा वैभव प्रदर्शित करना चाहती थी। जैसे इस सबका प्रयोजन यह जताने की कोशिश थी कि पैसे के बल पर क्या कुछ नहीं किया जा सकता है?

पैसों का यह तर्क शुचि की दृष्टि में सबसे बड़ा तर्क है जिसकी शक्ति बचपन से अपने पापा के यहां वह देखती आयी है।

इसके विपरीत रोहित ने जीवन को आर्थिक परिसीमन में ही जिया है। अनावश्यक रूप से पैसा खर्च कर तड़क-भड़क का जीवन बिताना उसे रुचिकर नहीं है। उसकी रुचि के पीछे इन्हीं प्रिया जीजी का दिया संस्कार है। पैसा जीवन की आवश्यकता मात्र है—साधन है। साध्य नहीं बचपन से यहीं उसने सीखा है। किन्तु शुचि की दृष्टि में यह उसका एक पूर्वाग्रह है, जिसका सम्बन्ध अभावों में बीते हुए उसके आरम्भिक जीवन से है। वह उसे उसकी हीनग्रंथी मानती है। इस हीनग्रंथी को अपने बच्चों में वह नहीं पनपने देगी। तभी उनका लालन-पालन वह अपने ढग से कर रही है। रोहित का कोई परामर्श वह नहीं लेती और रोहित यह सब सहता आया है, ताकि सम्बन्धों में तनाव न आयें।

दरवाजे पर कार रुकने का स्वर सुनाई पड़ता है फिर कालबेल बजती है। प्रिया जीजी को लेकर रोहित स्टेशन से आ गया है। ड्राइंग रूम खोलकर अभिवादन कर शुचि उन्हें बिठाती है पर चरण नहीं छूती।

"तुमने जीजी के पैर नहीं छुए ?" रोहित उसे रोक देता है।

"ओह, सच पूछिए तो पैर छूने की मेरी आदत नहीं है," कहते कहते शुचि प्रिया के सामने झुक जाती है।

"उसकी कोई जरूरत नहीं बहू," प्रिया उसे बीच में ही रोकती है, "यह सब रिवाज तो अब पुराने पड़ गये हैं।"

प्रिया उठकर अटैची खोलती है 'यह साड़ी और ब्लाउज बहूरानी तुम्हारे लिए है, और इस पैकेट में नीलू और उनके लिए कपड़े हैं।"

"आपने यह सब तकलीफ क्यों की ? आपका तो आशीर्वाद ही बहुत है। फिर जीजाजी भी तो अब रिटायर्ड हो चुके हैं।" शुचि दोनों पैकेट लेकर टेबल पर रख देती है।

"तुम्हारे जीजाजी रिटायर हो गये तो क्या हुआ ? बरसों के बाद आयी हूँ तो क्या खाली हाथ आती ? तुमने पैकेट खोलकर अपनी साड़ी देखी भी नहीं।

"बहू...." यह आत्मीय सम्बोधन रोहित को बड़ा अच्छा लग रहा है, *किन्तु शुचि यंत्रवत् पैकेट खोल डालती है। "साड़ी अच्छी है"* कहकर शुचि उसे पुनः पैक कर देती है।

"और मेरे लिए क्या लायी हो जीजी ? रोहित के स्वर में शिशु जैसा भोलापन स्पष्ट दिखाई देता है।"

"तेरे लिए क्या लाती हा, मैं खुद जो आ गयी हूँ प्रिया कहती है, फिर वे दोनों एक साथ हां—हां कर हंस पड़ते हैं। शुचि चौंककर

देखती है, किन्तु उनकी सम्मिलित हंसी में साथ नहीं दे पाती। फिर चाय-नाश्ते की व्यवस्था करने को वह उठ जाती है।

डायनिंग टेबल पर वे सब बैठते हैं। प्रिया कुछ संकुचित होकर कहती है—'इतना सब खाकर फिर रात को खाने की भूख किसे रहेगी? यह टोस्ट, काजू और फल। मेरी तो इतना सब खाने की आदत भी नहीं है।"

"कोई बात नहीं फिर कभी-कभी खाने में क्या हर्ज है?" शुचि चाय बनाते बनाते कहती है।

"हर्ज क्यों नहीं है, फिर आदत जो बिगड़ती है", प्रिया निश्छल हंसी हंस देती है।

"तो हम सब की आदतें बिगड़ती रही हैं"—मन ही मन कुढ़ने लगती है शुचि और सचमुच ही प्रिया सूप पीकर रह गयी थी। उसने खाना खाने से मना कर दिया था। शुचि को लगा था—खाना बनाने का उसका सारा कौशल व्यर्थ हो गया था। उसके चेहरे की भावनाओं को भांप कर प्रिया ने कहा था—ज्यादा खाने से बीमार हो जाती हूँ अभी कुछ दिन यहीं रहूंगी। जीभर खिलाना-पिलाना।"

"आज हमारा क्लब डे है, रात का डिनर भी वहीं है। आप भी चलेंगी न जीजी?" रोहित ने आफिस से लौटकर प्रश्न किया।

"क्या बहू जायेगी?" प्रिया ने पूछा।

"हम सब ही जाते हैं"

"चली चलूंगी।"

और शाम को जब वे अपनी हैंडलूम की साड़ी पहन कर तैयार हुई तो शुचि ने बाधा दी— "यह हैंडलूम की साड़ी मत पहनिए दीदी। इसका कलर भी फेड हो गया है। कोई सिल्क की साड़ी पहनकर चलिये।"

"मेरे पास तो यह हैंडलूम और खादी की ही साड़ियाँ हैं। सिल्क की नहीं है।" प्रिया बोली।

"तो मेरी कोई साड़ी पहन चलिए।"

"नहीं बहू, मुझे यह अच्छा नहीं लगता।"

"पर अतिथि को अतिथेय के सम्मान का ध्यान भी रखना चाहिए। हम लोगों की कुछ पोजीशन है यहां दीदी।" शुचि के स्वर में दर्प की भावना उभर आयी थी।

"तो मैं नहीं जाऊंगी" कहकर प्रिया बेडरूम में चली गयी थी।

"जब यहां आयी थी तो ढंग के कपड़े लेकर तो चलना था," शुचि झुन्झला उठी थी।

"हमारी पोजीशन से कहीं ऊंची पोजीशन जीजी की है, क्योंकि वे हमारी बड़ी बहन हैं, वे जैसे भी जाना चाहें, चल सकती हैं" रोहित के इस कथन से जैसे शुचि का अन्तर्द्वन्द और अधिक तीव्र हो गया था। किन्तु रोहित के सारे प्रयत्नों के बावजूद प्रिया जीजी उस रात क्लब के डिनर में शामिल नहीं हुई थी।"

प्रिया जीजी के आजाने से रोहित और शुचि की दिनचर्या में परिवर्तन आ गया है। रोहित आठ बजते बजते गाड़ी निकालकर शुचि को शापिंग करने नहीं ले जा पाता। बच्चे घूमने की जिद करते हैं, वह भी पूरी नहीं कर पाता इसके विपरीत बड़ी रात तक लान पर कुर्सियां डाले वह और प्रिया बतियाते रहते हैं। बीच बीच में प्रिया का खुलकर हंसना और रोहित के ठहाके सुनाई देते हैं। शुचि इस वार्तालाप से तटस्थ सी रहती है। न जाने क्यों इन दिनों शुचि का काम बहुत बढ़ गया है। जब कि महाराजिन को छुट्टी दे दी गयी है और सुबह के नाश्ते से लेकर लंच, तीसरे पहर की चाय और रात के खाने तक का

सारा काम प्रिया ने सम्हाल लिया है। यह रोहित के अनुरोध पर ही उसने स्वीकारा है।

रोहित रोज-रोज नयी-नयी फरमाइशें कर खाने-पीने की चीजें बनवाता रहता है, जिन्हें वह बचपन से खाता आया था। बच्चे भी बहुत खुश हैं, क्योंकि उन्हें नाश्ते दोपहर और रात के भोजन में घिसी पीटी चीजों की जगह रोज नयी नयी चीजें मिल रही हैं। पर शुचि कहती है–पहले जिम्मे खाना बनाने और घर की देखभाल करने का ही काम था। फिर चेंज के लिए हफ्ते में एक दिन वे बाहर खाना खाते ही हैं। क्लब और सोशल विजिट मे भी कभी-कभी घर से बाहर खाना ही पड़ता है। शुचि का यह कथन रोहित को स्वीकार्य नहीं है। घर के भोजन में बनाये गये प्रत्येक पदार्थ के पीछे बनाने वाले के प्यार और अपनत्व की जो भावना है, उसे किसी भी फाइव स्टार होटल में पाना असम्भव है।

नीलू और जय अब प्रिया से बहुत हिल मिल गये हैं। ये उसे आंटी न कहकर अब बुआजी ही कहते हैं। रोहित ने उन्हें यही सिखा दिया है। स्कूल से आकर अपना ज्यादा समय वे प्रिया के साथ ही बिताते हैं। रात को उसी के कमरे में सोते हैं। यह सब देखकर शुचि को विस्मय होता है कहा तो यह दोनों बच्चे इसे एक पल को भी नही छोड़ते थे। दूध पीने और खाना खाने के लिए नखरे करते थे। और कहां अब अपनी बुआजी के इतने आज्ञाकारी बन गये हैं। सारा दिन बेहद खुशी से उछलते कूदते फिरते हैं। ये वे ही नीलू और जय है क्या?

परिवर्तन तो अब रोहित मे भी आ गया है। किसी बात को लेकर वह हमेशा की तरह शुचि से बहस में नही उलझता, आफिस से लौटकर गाउन पहनकर बेडरूम में भी जाकर अब वह नहीं लेटता।

लोन को सुबह उठकर तर करने और क्यारियों में पानी देने का काम उसने सम्हाल लिया है जिसे लेकर शुचि से उसकी प्रायः कहा सुनी होती रहती थी।

शुचि को लगता है प्रिया के आने से नीलू, जय और स्वयं रोहित को एक ऐसा स्नेहभरा संरक्षण मिल गया है जो वह अनेक प्रयत्नों के बाद भी उन्हें नहीं दे सकी है। पैसे के बल पर सारी सुख-सुविधाएं जुटाने के बावजूद भी।

सुबह तार आया है। तार रोहित के जीजाजी ने दिया है। प्रिया को तुरन्त लौट आने के लिए। प्रिया की ननद का विवाह तय होना है। वे उसे देखने आ रहे हैं। प्रिया को जाना ही होगा। पर, इतनी जल्दी? रोहित नीलू और जय उदास हो जाते हैं। वे नहीं चाहते, प्रिया अभी जाये।

"आज शनिवार है। शनिवार तुम्हारा क्लब डे होता है ना। शाम को तुम सब जाओगे और रात का खाना भी वहीं होगा।" प्रिया कुछ याद करते हुए कहती है।

"नहीं दीदी—आज हम क्लब नहीं जा रहे हैं। घर ही में रहेंगे। फिर दो दिन बाद तो आप चली ही जायेंगी।" यह स्वर शुचि का है। उसकी आंखें यह सब कहते कहते तरल हो जाती हैं।

रोहित अपनी पत्नी की ओर विस्मय से देखता है। देखे ही जाता है—

□

दंश

अनीता को लगा कालबेल बजी है।

अनीता दरवाजा खोलकर देखती है, कहीं कोई नहीं है। लिफ्ट वैसी ही खड़ी है, सूनी-सूनी। अनीता फ्लैट का दरवाजा पूरा खोलकर आश्वस्त हो जाना चाहती है। वह ड्राइंग रूम में आकर दरवाजा बन्द कर लेती है। अनीता को लगता है, शायद वह उसके मन का भ्रम है। नितिन के कालबैल बजाने का भ्रम। अनिता को यह भ्रम अच्छा ही लगता है। ड्राइंग रूम की दीवार-घड़ी में पौने छैः बज रहे हैं, पर शाम जैसे काफी गहरी हो गई है। अनीता कर्टन हटाकर देखती है। सामने कपूर साहब के फ्लैट का ड्राइंग रूम उसी प्रकार ट्यूब लाइट में नहाया सा लगता है। रेकार्ड-चेंजर पर फिर वही फिल्मी गीत बज रहा है। रोज-रोज कपूर साहब के आते ही यह सिलसिला शुरू हो जाता है, रेकार्ड चेंजर पर किसी एल० पी० के बजने का साथ-साथ काफी पीने का, या फिर कपूर और मिसेज कपूर के जोर-जोर से खिल-खिलाकर हसने का। अनीता रोज यह सब देखती है। यह सब देखकर उसे सुख मिलता है, सहज काल्पनिक सुख। अनिता कर्टन थोड़ा सर-काकर मिसेज कपूर की प्रोफाइल देखती है, खुले सिर पर बंधा हुआ जूड़ा गोरे चेहरे पर पफ लगा हुआ पाउडर, होठों पर लिपस्टिक। कपूर साहब के आफिस से आने के बहुत पहले मिसेज कपूर तैयार हो जाती है।

अनीता कर्टन फिर यथावत सरका देती है। वह ड्रेसिंग टेबल के सामने आ खड़ी होती है आज काफी अरसे के बाद अनीता ने फाउ-न्डेशन लोशन के साथ मेकअप किया है। आज बनाया गया हेयर स्टाइल

जो उसका अत्यन्त प्रिय है। अपनी पसन्द की स्काई-ब्लय कांजिवरम् सिल्क की साड़ी भी अनीता ने आज पहनी है। आइने में अपनी छवि देखकर अनीता को मन ही मन परितोष होता है। अनीता अपना चेहरा कुछ स्थिर दृष्टि से देखती है। समय के साथ लगता है, यह चेहरा भी अब बदल गया है। फिर अनेक चेहरे, उसके परिचित चेहरे अनीता की कल्पना में आ जाते हैं। अनीता उन चेहरों की तुलना अपने चेहरे से करती है। फिर उसकी दृष्टि फिसलती हुई दीवार पर घड़ी की ओर चली जाती है, जो सवा सात बजा रही है। अनीता पुनः सोफे पर आकर बैठ जाती है। पीछे लगे रेक में पुस्तकें पलटने लगती है। अगाथा क्रिस्टी या फिर अर्ल स्टेनले गार्डर के कुछ जासूसी उपन्यास एक दो बेतरतीब पड़ी हुई अंग्रेजी पत्रिकाएं। नितिन को यही सब पसन्द है। यह उसकी अपनी रुचि है। फिर अनीता की दृष्टि तिपाई पर पड़ी हुई डाक पर चली जाती है, जिनके कुछ पत्रों के साथ-साथ अनु का ग्रीटिंग टेलीग्राम भी है, अनु अर्थात् उसकी बेटी अनुभा की भेजी गई बधाई। अनीता तीसरी बार उसे खोलकर पढ़ती है। फिर दीर्घ निश्वास लेकर उसे पुनः लिफाफे में बन्द कर रख देती है। वह परेशानी से दीवार घड़ी की ओर देखती है समय जैसे तेजी से सरक रहा है। निराश सी होकर अनीता फिर खिड़की के उस पार कपूर साहब के फ्लैट की ओर देखती है। ड्राइंग रूम में रेकार्ड चेंजर पर अब रिकार्ड नहीं बज रहा है। ट्यूब लाइट आफ हो चुकी है। बतियाने और जोर-जोर से हंसने की आवाजें भी अब नहीं आ रही हैं। शायद वे लोग बाहर जा चुके हैं। अनीता को जैसे यह सब देखकर एक व्यर्थता का अहसास होता है, जो धीरे-धीरे उसके मन में कहीं बहुत भीतर उतरता चला जाता है।

अनीता को याद आता है—पहले ऐसा सब न था। आज के दिन नितिन के आफिस से आने की इतनी राह उसे देखनी नहीं पड़ती थी। नितिन और वह दोनों ही बैठकर कार्यक्रम बनाते थे—अपनी मैरज

ऐन्वरसरी मनाने का। पिक्चर कौनसी देखी जायेगी ? डिनर कहाँ लेंगे ? पार्टी में किस-किस को बुलाया जायगा ? साड़ी का चुनाव करता था, नितिन अपनी पत्नी के लिए। अनीता स्वयं जाकर उसके लिए सूट-लेंग्थ का शेड पसन्द करती थी, और नई टाई भी मैच करती हुई। लगभग सात-आठ वर्ष ऐसे ही बीते थे।

किन्तु अब। अब जो कुछ होता है, यन्त्र-चालित सा होता है। उस समय पहले जैसी न उष्मा है, न ललक। जैसे इस दिन की संवेदनशीलता कहीं खो गई है। वैसे अब भी अनीता के पास ढेर सी साड़ियां हैं, गहने हैं, बैंक में काफी मोटा बैंक बैलेंस है, फ्रिज, कूलर, टी० वी० सेट, रेडियोग्राम, सभी कुछ है उसके पास। पर यह सारा ऐश्वर्य अनीता को वह सुख नहीं दे पाता।

कौनसा सुख ? वह सात-आठ वर्ष पहले का सुख। वह सुख जो कपूर साहब तथा मिसेज कपूर को मिल रहा है।

नितिन ने जूनियर आफिसर की पोस्ट से नौकरी शुरू की थी। अब वह अपनी फर्म का टाप एक्जीक्यूटिव था। पोजीशन के साथ-साथ उसके सारे तौर-तरीके भी बदल चुके थे। अब वह बहुत व्यस्त रहने वाला व्यक्ति बन गया था। आफिस में पहले की तरह अनीता टेलीफोन पर सीधे बात नहीं कर पाती थी नितिन से। उसका टेलीफोन पी० ए० ही मिलाता था। उसके एपांइटमेन्ट भी पी० ए० ही तय करता था। कभी-कभी तो एक नहीं दो-दो बार "प्लीज होल्ड आन" सॉरी मिस्टर नितिन इज नाट इन हिज चेयर, सुनकर ही उसे सन्तोष करना पड़ता था।

आज भी पी० ए० ने नितिन की इंगेजमेंन्ट डायरी में नोट किया था वह सब। आफिस जाते-जाते अनीता ने भी याद दिलाई थी। नितिन मुस्कराकर बोला था—"यस डीयर याद है मुझे, आफिस से जल्दी आने की कोशिश करूंगा।"

इंगेजमेन्ट डायरी के अनुसार अपनी शादी की 11वीं साल-गिरह पर नितिन को पांच बजे आफिस से निकलना था। फिर रात को मिसेज अनीता नितिन के साथ साढ़े आठ बजे तक 'ताज" में डिनर के लिए पहुंचना था।

टिक""टिक -। अनीता की दृष्टि फिर दीवार घड़ी पर चली जाती है, जो ठीक आठ बजा रही है। जैसे वह टिक . टिक कमरे में ही नहीं, अनीता के मस्तिष्क में भी कहीं प्रवेशती है। कितना मुखर लगता है वह टिक-टिक शब्द ? सोचती है अनीता। फिर देखती है, न जाने कब से चुपचाप चरण आकर खड़ा हो गया है उसके पास ?

"साहब आ गये क्या ? ....अनीता पूछती है।

चरण उत्तर में मूक सिर हिलाता है।

"क्या बजा होगा ?" ....फिर पूछती है।

चरण को विस्मय होता है, अनीता के प्रश्न पर।

"बीबी जी। रात के खाने के लिए कुछ बनाना होगा क्यों ?" चरण पूछता है।

रात का खाना, वह तो हम बाहर खायेंगे।

साहब ने तुम्हें नहीं बताया है ? ....अनीता उत्तर देती है।

तभी टेलीफोन की घंटी बजती है। अनीता तेज कदमों से चलकर फोन लेती है। फोन नितिन का ही है।

'सॉरी डियर" यहां बुरी तरह से फस गया हूं। यह डील फाइनललाइज करने में काफी देर हो सकती है। नितिन कहता है।

'कब तक आ रहे हैं आप ?" अनीता पूछती है।

"मुझे लौटने में 11 भी बज सकते हैं।"पर, कुछ तय नहीं उधर से उत्तर आता है।

"तुम मेरा वेट न करना डियर। डिनर अकेले ही ले लेना।" उधर से आग्रह होता है।

तो नितिन नहीं आएगा—उधर से टेलीफोन डिसकनेक्ट हो जाता है।

किन्तु आज ही नहीं, पिछली बार भी तो ऐसा ही हुआ है। इसी दिन। तभी भी चरण ने आज जैसा ही प्रश्न किया था। आज ही की तरह उसे अचरज हुआ था। आज ही की तरह अनीता ने उत्तर नहीं दिया था उसे –

पर चरण का मन नहीं मानता। वह किचन में जाकर व्यस्त हो जाता है। आज रात साहब का डिनर कहाँ और किसके साथ होगा चरण से छिपा जो नहीं है। कुछ ही देर में डाइनिंग टेबल पर प्लेट और चम्मच खटकने की आवाजें होती हैं।

अनीता का ध्यान उस ओर नहीं जाता है। वह दरवाजा खोलकर बालकनी में आ जाती है। रात काफी गहरी लगती है। चन्द्रमा हल्की बदली से झांकता है, सहमा सहमा सा। शायद आज फिर ओस गिरेगी, कुहरा फिर घना छाता जाएगा.......

अनीता को याद है एक साल पहले भी आज के दिन ऐसी ही रात थी, ऐसी ही ओस गिरी थी, और कुहरा भी घना होता गया था—घना और घना।

□□

विवशता

सुमित्रा को लगा आज उसे फिर बुखार आ गया है । उसने अपनी नब्ज पर अंगुलियाँ रखीं, वह काफी तेज चल रही थी, फिर अपना माथा छुआ, वह भी गर्म था । सुमित्रा बहुत चाहती है, उसे बुखार न आये, फिर भी वह आता ही है । बहुत सावधानी बरतने पर भी वह बार-बार अस्वस्थ हो जाती है ।

माँजी अब भी कमरे में चारपाई पर पड़ी-पड़ी खांस रही थीं। शिशु, संजय और शीला तीनों बच्चे स्कूल जा चुके थे । तीन बजते-बजते शिशु और संजय स्कूल से लौट आते हैं, फिर चार बजे तक शीला, स्कूल से लौटते ही बच्चों को कुछ खाने के लिए चाहिए । सुमित्रा कुछ बनाकर रख देती है । शीला तीनों में बड़ी है । वह खाने की जिद्द नही करती । पर ये जो शिशु और संजय हैं, जैसे रट लगा देते हैं । वे सिर्फ ब्रेड नही खायेंगे । खायेंगे तो टोस्ट और मक्खन । फिर, न जाने आजकल मम्मी को क्या हो गया है, दूध और चाय में पूरी शक्कर भी नही डालती है । शीला जब तक दोनों भाईयों को डांटती है—"जो कुछ मिल रहा है खा-पी क्यों नही लेते । देखते नहीं, मम्मी को आज फिर बुखार आ गया है ।" पर शिशु और संजय आश्वस्त नही हो पाते । जिद्द करते ही रहते हैं ।

पत्नी की इस रोज-रोज की बीमारी से सुरेश भी आश्वस्त नही हो पाता । उसने एक नहीं, दो विषय में एम० ए० किया है । सुरेश ने सोचा था, वह आई० ए० एस० की परीक्षा में बैठेगा, अगर आई० ए० एस० हो जायेगा तो केरियर बन जायेगा । पर भाग्य ने साथ नहीं दिया और ऐसा नही हो पाया । उसकी भाग्य-रेखा यू० डी० सी० तक

पहुँचते-पहुँचते ठहर गयी थी । अपरिवर्तनीय यह ठहराव जिन्दगी में भी कहीं आ गया था, उसे एस० बी० एफ० और लोन कट-कटा कर कुछ साढ़े चार सौ वेतन मिलता है । सुमित्रा ग्रेज्यूएट है और बी० एड० भी वह भी बंधकर नौकरी नहीं कर पाती, पहले शीला आई, फिर संजय और शिशु । छ:-सात वर्षों के वैवाहिक जीवन में तीन बार माँ बनने के बाद भी सुमित्रा को मुक्ति नहीं मिली थी । और अब चौथी बार............सोचते-सोचते सुमित्रा के शरीर मे भय से झुरझुरी आ जाती है । कितनी कमजोर लगती है सुमित्रा की आँखों के नीचे काले धब्बे अब और गहरे हो गये है । काम करते-करते उसे चक्कर भी आ जाता है । और यह रात को बेहद थकान, प्रतिदिन आने वाला यह बुखार । इस परिस्थिति में भी सुमित्रा दो-दो ट्यूशनें संभाले हुए है । साढे चार सौ में वह डेढ सौ रुपये और जोड़ देती है । पर इस मंहगाई में छः सौ से भी क्या होता है । पति, पत्नी, माँजी और तीन बच्चे अब........सातवा जीव भी भागीदारी के लिए आने वाला है।

सुरेश की तरह सुमित्रा का भी एक सपना था । उसकी अपनी गृहस्थी होगी, अपना घर होगा । टी० वी०, फ्रिज वह सब खरीदेगी और आधुनिक ढंग से जीवन बितायेगी । बच्चों को ऊँची शिक्षा देगी । पर सपने-सपने ही होते हैं । उसकी उल्टे पल्ले की साड़ी, कुछ लो कट ब्लाउज और हल्के से मेकपक से प्रारम्भिक दिनों में उसकी देह दृष्टि आकर्षक दिख पड़ती थी और उसे देख-देख कर सुरेश का मन पुलक से भर जाता था, तब माँजी भी अपनी बहू को देखकर फूली नहीं समाती थी । सलीके का रहन-सहन और विनयशीलता । घर की लक्ष्मी में भला और कौन से गुण चाहिये ? अब माँजी वैसा नहीं सोचती, सुरेश का भी वह आत्मिक सुख कहीं अतल मे डूबने लगा है । माँजी को भी बहू में अनेक दोष दिखाई देने लगे हैं । वह जब तब झुंझला उठती हैं और विद्रूप से कहती हैं—अब उसकी इस घर से देखभाल ही कहाँ होती है वह बोझ बन गयी है अपने बेटे और बहू के लिए अच्छा होता

यदि वे अपने दिवंगत पति के साथ-साथ इस संसार से विदा हो जाती यह सब सुन-सुन कर सुरेश और सुमित्रा का मन गहरी व्यथा से भर जाता। सुरेश अपने माँ-बाप का एकमात्र पुत्र है। पिता के बाद माँ के प्रति उसने अपना पूरा उत्तरदायित्व निभाया है। पर आखिर अब ऐसा क्या हो गया है, माँजी खुश क्यों न रह पाती ? क्या सचमुच सुमित्रा का स्वभाव बदल गया है। बच्चे क्यों इतने चिड़-चिड़े हो गये हैं ? रह-रह कर यही, प्रश्न सुरेश को भीतर से कहीं मथते हैं। और उस मंथन की चरम परिणति तब होती है जब माँजी अपनी मृत्यु की ही कामना नहीं करतीं, यह भी कहती हैं—बहू के साथ बेटा भी बदल गया है। जमाना ही ऐसा है। यह कुछ नया नहीं हो रहा है। सुन-सुन कर सुमित्रा निरीह सी दु:खी हो उठती है, माँजी सुरेश दोनों के अपने प्रति इस परिवर्तित व्यवहार से वह विचलित होकर सोचती है, क्या उसकी सारी सेवा, त्याग और आत्म सुख का बलिदान व्यर्थ ही जायेगा। क्या वांछित सुख-सुविधाओं के अभाव में शिशु, सजय और शीला उससे घृणा नहीं कर उठेंगे ? क्या शेष जीवन घोर उपेक्षाओं में ही बीतेगा ?

यों सुमित्रा जीवन के संघर्षों से भागना नहीं चाहती। वह माँजी का सर्वाधिक ध्यान रखती है, फिर पति का और अपने तीनो बच्चों का। किन्तु यह सब करते-करते वह टूट जाती है। सुरेश स्वयं भी नहीं चाहता कि जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ पूरा करने में वह कहीं पिछड़ जाये। इस सब की पूर्ति के लिए कभी-कभी सुरेश को उधार का भी सहारा लेना पड़ता है। इस प्रसंग को लेकर पति-पत्नी में प्राय: कलह हो जाती है। किन्तु दोनों ही भलि-भाँति जानते हैं, उनके पास इसके अलावा चारा ही क्या है।

सुरेश ने ऑफिस से आकर देखा, सुमित्रा अब भी रसोई में है। वह सोचा वहीं पहुँचा और पत्नी से पूछता है—"इस समय रसोईघर में क्या कर रही हो?"

"सोचती हूँ, खाना बनाकर रख दूँ। आज तबीयत कुछ अच्छी नहीं है, जल्दी निबट कर कुछ आराम करूँगी।" सुमित्रा उसी व्यस्तता से कहती है।

"आज चाय नही मिलेगी?" सुरेश प्रश्न करता है।

"आप कपड़े बदल कर हाथ मुँह धो डालिये। मैं चाय लेकर वहीं आती हूँ"। सुमित्रा उसी सहज भाव से कहती है।

"अरे, एक खबर सुनाना तो भूल ही गया। ऑफिस के पते पर मुझे चिठ्ठी मिली है। कल सुबह की ट्रेन से सीमा आ रही है। अजय किसी ट्रेनिंग के सिलसिले में बम्बई गया है। शायद महिने भर सीमा यहीं ठहरेगी। कई सालो के बाद सीमा से मिलना होगा।"

"यह तो बडी अच्छी खबर है। शादी के बाद सीमा दीदी से मिली ही कहाँ हूँ?" पति के हाथ से पत्र लेकर सीमा पढ़ती है। फिर दीर्घ निश्वास लेकर रसोई के काम में फिर जुट जाती है। "अरे सुनिये, चाय पीकर जरा बाजार हो आइये, मैं चिट पर लिख देती हूँ। कुछ जरूरी सामान अभी ही लाना होगा।"

सुमित्रा के स्वर मे घुला हुआ चिन्ता का भाव सुरेश से छिपा नही रह पाता, पत्नी की दृष्टि से मिलते ही वह स्वयं भी उसी चिन्ता में डूब जाता है। सुमित्रा सोचती है—वह जल्दी निबट कर क्या आराम कर पायेगी? सीमा आ रही है। सुरेश की चचेरी बहन आयु में सुमित्रा से छः महीने ही तो छोटी है शिक्षित और सुसंस्कृत।

उनके विवाह से एक वर्ष पहले ही सीमा का विवाह हुआ था। सुमित्रा तो विवाह में ही उसके काफी निकट आ गयी थी। सीमा का खुलापन और मैत्रीभाव सुमित्रा को बहुत अच्छा लगा था। उसमें आत्मीयता ही आत्मीयता थी। जरा भी औपचारिकता नहीं। वही सीमा उनके पास रहने के लिए आ रही थी। सुमित्रा को कितना अच्छा लग रहा है। किन्तु उस सुख को नई संभावनाएँ जैसे पीछे ढकेल देती हैं। किसी मेहमान के घर आ जाने से क्या खर्च नहीं बढ़ जाता है। फिर सीमा की बिदाई भी तो उसे करनी पड़ेगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल सीमा ने आकर सुमित्रा को देखा तो देखती ही रह गई। उस सुमित्रा को जिसे उसने छः वर्ष पूर्व देखा था और इस सुमित्रा में जो उसके सामने आज खड़ी थी जमीन और आसमान का अन्तर आ गया था। एक स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक युवती के स्थान पर रुग्ण, पीली आभा लिये, दुर्बल मुखाकृति वाली नारी उसके सामने खड़ी थी। सुमित्रा के लम्बे और सुन्दर बाल अब झड़ने लगे थे, आँखें थकी-थकी सी लग रही थी और उनमें वे सपने नहीं झांकते थे जो कभी सीमा ने देखे थे।

"क्या हो गया है तुम्हें भाभी ?,, पूछते-पूछते सीमा प्यार से उसका हाथ पकड़ कर अपने निकट खींच लेती है। "न वह रूप रहा और न वह रंग क्या भाभी बीमार है भैया ? "सुरेश से वह प्रश्न करती है" सुरेश कुछ उत्तर नहीं दे पाता।

"मैं ठीक ही हूँ सीमा दीदी, तुमने बहुत दिनों बाद देखा है न इसलिए ऐसा लग रहा है।" सुमित्रा एक करुण हँसी हँस देती है। उसे सुनकर फिर चिन्ता में डूब जाता है और सुमित्रा बिना किसी बात-चीत का अवसर दिए तुरन्त रसोईघर में चली जाती है। उसके

जाते ही सीमा फिर पूछती है । "क्या भाभी की तबीयत खराब है ?"

"हाँ सीमा, तुम्हारी भाभी कुछ दिनों से बीमार चल रही है। और............और फिर (एक्सपेक्ट) कर रही है ।"

"और शिशु, संजय और शीला के बाद यह चौथी बार .... आप भी अजीब लोग हैं भैया, दोनों इतने पढ़े लिखे होने पर भी अपनी समस्या नहीं सुलझा पाये ।" सीमा क्रोध और आश्चर्य मिश्रित स्वर में कहती है ।

"समस्याओं से तो हम घिरे ही हुए हैं सीमा तुम जानती हो आज की जिन्दगी कितनी क्रूर हो गई है । दरअसल, मैंने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया सीमा । सच तो यह, कुछ समस्याओं को हम स्वयं ही जन्म देते हैं । मैंने भी वही किया है सीमा ।"

"आपने सचमुच भाभी के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है भैया ।" सीमा कहती है—"देखा आपने, वह क्या से क्या बन गयी है । उनकी वह छवि ही नहीं रही जो मैंने कभी देखी थी । और फिर जब वे सुखी नहीं, आप कैसे सुखी रह सकेंगे । भाभी को कैसे सुखी रख पायेंगे । और बच्चे............उन्हें क्या वह सब आप दे पायेंगे जो आप और भाभी चाहते हैं ।"

"वह तो मैं देख ही रहा हूँ सीमा । आज मैं सोचता हूँ, मैंने सचमुच सुमित्रा के प्रति बहुत बड़ा अपराध किया है किन्तु अब पछताने से क्या होता है । वह सारा सुख जिसकी तुम बात कर रही हो शायद किसी अन्धे कुएं में डूब गया है । सदा-सदा के लिए ।"

"हाँ भैया, कुछ सुख ऐसे होते हैं जिन्हें हम स्वयं अन्धे कुए में ड्बो देते हैं। कभी-कभी वह सुख हमारे अपने पास ही होता है। बहुत पास किन्तु हम उसकी उपेक्षा करते हैं।"

तभी सुमित्रा बुलाने आ जाती है शायद खाना तैयार हो गया था। यह सब सुनते-सुनते सुमित्रा की आँखें भीग जाती हैं।

"तो तुमने सब सुन लिया भाभी।"

"नहीं सीमा दीदी, मैंने तो कुछ भी नहीं सुना।" सुमित्रा झूठ बोली जाती है। और बरबस उन आँसुओं को रोके रहती है। "कुछ भी तो नहीं सुना।" सुमित्रा धीरे से मुस्करा देती है।

'आधी रात बीत चुकी है। चारों ओर निस्तब्धता है। सीमा को घेर कर बच्चे कब के सो चुके हैं। मांजी को आज खाँसी नहीं उठ रही है।

"सो गई क्या।" यह सुरेश का स्वर है। 'नहीं तो" सुमित्रा धीरे से उत्तर देती है। फिर घुटे-घुटे स्वर में पति से पूछती है—"कितने दिन रहेंगी सीमा दीदी।"

"मैंने कहा था न, अजय की ट्रेनिंग एक महीने की है। महीना भर समझो" सुरेश उत्तर देता है।

एक महीना—सुमित्रा मन ही सोचती है। महीने भर घर का खर्च वह कैसे चला पायेगी? तभी लाइट बल्ब ऑफ हो जाता है। लाइट फिर चली गई है—सुमित्रा सोचती है। अंधेरे में रात और भी घनी लगने लगती है। घनी और भयानक।

सुरेश की शायद आँख लग गई है। रात की सघनता और भयावहता धीरे-धीरे सुमित्रा के भीतर कहीं समाती जा रही है। उसे लगता है, नींद आज भी नहीं आयेगी। कल भी रात को ऐसा ही हुआ था और शायद परसों भी......................।

पर, कर भी क्या सकती है सुमित्रा ?

स्थिति बोध

आज फिर घर के वातावरण में काफी व्यस्तता आ गई थी।

सुबह से ड्राइंग रूम के सारे पर्दे बदल दिये गये थे। पर्दे ही नही, सोफासेट के कवर, दीवान की चादरें और फूलावर-वास के फूल भी। फिर कार्पेट ब्रुश से साफ कराकर बिछवाया था। अजित बराबर ताकीद करता रहा था, अजित अर्थात् उसका पति। मीनू क्या होगा ? डिनर सेट कौनसा निकाला जायेगा ड्रिंक के लिए सोडा और व्हिस्की काफी पहले से फ्रिज में रख दिये गये थे। सारी तैयारियां कर ली गई थी। अजित ने कहा था, नया मैनेजिंग डाइरेक्टर काफी सलीके का आदमी है, बड़ा ही रिफाइंड टेस्ट है उसका अगर डिनर से खुश-खुश लौटेगा तो जरूर ही उसे डी० एम० की पोस्ट मिल जाएगी।

अनुभा जानती है - यह पहली बार नही हो रहा है। ऐसी ही तैयारी पिछली बार भी की जा चुकी है। तब भी आशा बंधी थी लेकिन सब कुछ बेअसर साबित हुआ था। तबके मैनेजिंग डाइरेक्टर की पत्नी को डिनर के अलावा साडी भी भेंट गई थी, अमेरिकन जार्जेट की इंपोर्टेड साड़ी और मैनेजिंग डाइरेक्टर को बढिया इलेक्ट्रानिक्स की रिस्टवाच। दोनों ही बडे खुश-खुश डिनर से लौटे थे, किन्तु जोड नही बैठा था। एक सप्ताह बाद ही उसने कम्पनी से रिजाइन कर दिया था और अजित के डी० एम० बनने के प्रोस्पेक्ट्स चौपट हो गये थे।

काफी दिनों से अजित नये मैनेजिंग डाइरेक्टर मिस्टर सहगल से निकटता बढाता रहा था। मासिक कान्फ्रेन्स में भी अजित ने उसका विश्वास अर्जित करने के कई नुस्खे आजमाए थे। इस बार तो कान्फ्रेंस अपने हेडक्वार्टर टाउन में थी, यो तो किसी आलीशान होटल में इन्त

कान्फरेंसों का आयोजन होता है किन्तु अतिशय विनम्र मुद्रा में उसने मैनेजिंग डाइरेक्टर को डिनर पर अपने यहां इन्वाइट कर दिया था, मन में दहशत थी। पता नहीं नया आदमी है आए न आए फिर उसने यह भी सुना था बड़े सम्पन्न घराने का है मैनेजिंग डाइरेक्टर। उम्र पैंतीस के आसपास है। किन्तु अब भी बेचलर है। अत्यन्त पुलकित होकर उसने पत्नी को टेलीफोन पर बताया था। सहगल साहब ने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है।

और आज कई दिनों बाद अनुभा किचन में खड़ी खड़ी सब कुछ खुद कर रही थी। जैसे उसके सारे कौशल की परीक्षा होने वाली थी। भोजन स्वादिष्ट बनता है तो अतिथि बहुत प्रसन्न हो जाता है, सन्तुष्ट भी। पेट भर रुचिकर भोजन खिलाकर पुरुष को जीतना कितना सरल है, अनुभा जानती है, अपने वैवाहिक जीवन के आरम्भिक दिनों में स्वयं उसके अपने पति के सन्दर्भ में यह उपाय कितना सरल और अचूक सिद्ध हुआ था, वह जानती है आज भी फख्र से अजित कहता है—माई वाइफ इज एक्सेलेन्ट कुक। जिस स्वाद की चिकन बरियानी वह बनाती है, वैसी किसी फाइव स्टार होटल में भी शायद ही मिले, फिर यह जानकारी दोस्तों को देते साहबी अन्दाज में वह अपनी पत्नी की ओर देख भर लेता है।

प्रशंसा का यह भाव अनुभा को भी बहुत अच्छा लगता है। रिसीपी और कुकरी के वे सारे कोर्सेज और वह प्रशिक्षण जैसे सार्थक हो गया है। अतिथियों की प्रशंसा सुनकर अनुभा को तृप्ति होती है। अपने पति के फ्रेण्ड सर्कल में यह सब उसकी प्रसिद्धि और लोकप्रियता का सशक्त माध्यम बन गया था। यों भी वह काफी माड बने रहने का प्रयत्न करती है। भोजन के साथ-साथ घर की सजावट, कपड़ों के डिजाइन आदि के अद्यतन आधुनिकता लाने का वह प्रयास करती है। हाय, इस साड़ी का प्रिन्ट कितना प्यारा है? स्वेटर की यह डिजा-

इन कितनी लेटेस्ट है ? कलर भी कितना मार्वलस है। सुनते सुनते गौरवान्वित होने का एक अजीब एहसास उसे होता है, जो उसकी मानसिकता से अब कहीं गहरा जुड़ गया है। "नहीं कुछ खास नहीं, फिर यह फैशन तो बहुत पुराना पड़ गया है"। आदि कह कर इस प्रशंसा को वह आरोपित विनम्रता से स्वीकार कर लेती है। बहरहाल अनुभा को संतोष होता है, इस सारी कालोनी में उस जैसी आधुनिक महिला और कोई नहीं है।

किन्तु अनुभा से लगता है, यह सब काफी नहीं है। आधुनिकता के लिए स्टेटस भी चाहिये। जिस उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में वह ब्याही गई है, उससे कहीं ऊंचा उसका अपना मायका है। अपने पापा की तुलना में अपने पति का स्टेण्डर्ड उसे उपहासजनक ही लगता है। अनुभा का मन बुलबुलाता रहता है उसे पाने के लिए, अजित से यह सब छिपा नहीं है। वैसे फ्रिज, टी० वी० और कूलर सब उसने जुटा ही लिया है। एक गाड़ी की कमी रह गयी है। अजित आश्वासन देता रहता है, वह भी हो जाएगी। फिलहाल स्कूटर से काम चल ही रहा है किन्तु, गाड़ी की संस्कृति में पली अनुभा को यह आश्वासन नहीं बांधता। "न हो लोन ले लो, पर गाड़ी आना चाहिए" अनुभा आग्रह करती है— "शादी को दो साल होने आए हम गाड़ी नहीं खरीद सके—सारी सहेलियां क्या कहती होंगी। न हो तो पुरानी गाड़ी ही सही।

"पुरानी क्यों, हम नई गाड़ी ही लेंगे, मेरे डी० एम० बनते ही दो महिने में घर में गाड़ी देख लेना, नई गाड़ी, अजित समाधान कर देता है।

सहगल साहब आ गये हैं, फ्लेट के बाहर जाकर फुर्ती से अजित कार का दरवाजा खोलता है। फिर मैनेजिंग डाइरेक्टर को ड्राइंग रूम में ले जाता है। उसके सोफे पर बैठते-बैठते अनुभा कमरे में दोनों हाथ

जोड़ कर नमस्ते करती है। मेरी पत्नी अनुभा अजित परिचय कराता है। सहगल शालीनतापूर्वक उठ कर प्रति नमस्ते करता है। फिर अनुभा सामने ही कुर्सी पर बैठ जाती है। सहगल अपनी पैंट की जेब से सिगरेट केस निकालना चाहता है। तब तक अजित मेज से सिगरेट केस उठाकर उनके सामने पेश कर देता है। फिर लाइटर से उसकी सिगरेट जला देता है। फिर मौसम से लेकर शहर के थियेटरों और उनमें चलने वाली नई नई फिल्मों की चर्चा होने लगती है। वातावरण अत्यन्त अनौपचारिक बन जाता है। पूरी बातचीत के दौरान सहगल की दृष्टि अनुभा पर टिकी रहती है। सहगल उसे अत्यन्त आकर्षक लगता है और रोमांटिक तभी नौकर ट्रे में गिलास, व्हिस्की की बोतल और बर्फ रख जाता है। "क्षमा कीजिए मैं डिनर की तैयारी करती हूँ, "कहकर अनुभा उठ जाती है।

"शी वोंट जाइन अस ? सहगल पूछता है।

"जी नहीं, अनुभा ड्रिंक नहीं करती—मैं भी सिर्फ कम्पनी में, फिर आप तो मेरे खास मेहमान हैं "अजित बड़ी आजिजी से कहता है।

सहगल ने अब गिलास खाली कर दिया है। अजित उसके लिए दूसरा पेग बना रहा है।

"आपकी पत्नी बहुत सुन्दर है, ऐसी ब्यूटी तो केवल विज्ञापनों मे दिखाई देती है। यू आर लकी"–सहगल कह उठता है। "जी" *अजित चौंककर कहता है।* फिर शीघ्र ही "थैंक्यू सर" कहकर चुप हो जाता है।

अब डिनर टेबल पर वे लोग पहुंच गये हैं। अनुभा स्वयं आग्रहपूर्वक खाना परोस रही है। स्वयं उनके साथ खा रही है। 'फूड इज लवली" शायद आपने सारा दिन खाना पकाने में ही लगाया है।"

सहगल तारीफ करता है। आया के हाथ का खाना-खाते बोर हो गया हूं।

"तब आप जल्दी शादी कर लीजिए सर। ऐसा ही खाना रोज मिलने लगेगा" अजित कहता है, सहगल क्षण भर अनुभा की ओर देखता है, बेशक मैं शादी कर सकता हूं, अगर आप जैसी पत्नी मिल जाए" सहगल मुस्करा-कर अनुभा की ओर फिर एक अर्थपूर्ण दृष्टि डालता है, अनुभा का चेहरा लाल हो उठता है। सहगल की वह दृष्टि जैसे उसे कहीं बहुत भीतर तक बेध जाती है। क्यों नहीं मिल जाएगी, कोई भी लड़की आपसे शादी कर अपने को भाग्यशाली समझेगी सर, सुन्दर से सुन्दर भी, फिर आपकी अभी उम्र ही क्या है।" कहते कहते अपनी ही बात पर अजित हंस देता है। अनुभा विचित्र दृष्टि से अपने पति की ओर देखभर लेती है, किन्तु कहती कुछ नहीं।

अजित की दबी-दबी हंसी के साथ ही सहगल भी ठहाका लगा कर हंस पड़ता है। अनुभा चौक कर अपने पति की ओर देखती है, फिर सहगल की ओर। मैं आइसक्रिम लाती हूं। कहकर अनुभा उठ जाती है। उसे बोध होता है, सहगल ने काफी पी ली है।

आइसक्रीम खाकर सहगल सोफे पर लेट जाता है। फिर एक सिगरेट सुलगाता है। अनुभा दीवार पर लगी घड़ी में देखती है। रात के साढ़े ग्यारह बज रहे हैं। वह घुटी-घुटी निगाहों से अपने पति की ओर देखती है। अजित उसकी ओर।

अब सहगल ने ढेर सा धुंआ मुंह और नाक से निकाल कर सिगरेट बुझा ली है। "नाइस मिटिंग यू"—कहता हुआ वह सोफे से उठ खड़ा होता है।

"थैंक्स फर कमिंग सर" अजित कहता है।

"नाट एटाल, फिर ग्रभी तो हम लोगों का ग्राना ही जाना शुरू हुग्रा है" । ग्रनुभा की ग्रोर देखते-देखते सहगल कहता है । फिर उसके चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान फैल जाती है । ग्रनुभा जैसे उस मुस्कान का ग्रर्थ जानती है ।

किन्तु ग्रपने पति की भांति ग्रनुभा ठीक से उसे विदा नहीं दे पाती । ग्रनुभा को लगता है उसका सिर चकरा रहा है, चकराए जा रहा है..........

□□

अप्रस्तुत

सितार के तार फिर एक बार झनझनाकर अनगूंज के साथ रुक गये। आज फिर वैसी ही दर्दभरी धुन थी। पल्लवी जैसे सुनकर पुनः चेतना में लौट आई थी।

पल्लवी को सितार बहुत पसन्द है अपने छात्र जीवन में उसने कभी इच्छा की थी कि वह सितार सीखेगी। किन्तु अवसर नहीं मिला।

कौन बजाया करता है प्रत्येक रात्रि को बड़े देर तक सितार पर इतनी मीठी किन्तु दर्द भरी धुनें, गंगा से पूछा था पल्लवी ने। पल्लवी जब इस फ्लैट में रहने आई थी, उसने सर्वेन्ट क्वार्टर में इसी गंगा को पाया था। फिर गंगा ही उसके सम्पूर्ण परिचय बोध का माध्यम बन गई थी।

गंगा ने बताया था पड़ोस के फ्लैट में रहते हैं नितिन बाबू। डाक्टर नितिन को इस मकान में रहते हुये चार-पांच वर्ष हो गये थे। गंगा ने सिवाय उनकी वृद्ध माँ के कभी किसी को उनके यहाँ आते नहीं देखा था। वे भी बीच-बीच में आती थीं और चली जाती थीं। अकेले रह जाते हैं डाक्टर बाबू और उनका यह सितार। सूने फ्लैट में रात बड़ी देर तक सुनाई पड़ने वाली अनुगूंजें।

गंगा ने कहा था, डाक्टर बाबू की ज्यादा उमर भी तो नहीं है। यही होंगे पैंतीस छत्तीस के आस-पास। पर गंगा ने कभी उन्हें हँसते न देखा था।

पल्लवी अब बेड रूम में लौट आई थी। खिड़की खोलकर उसका पर्दा उसने खींच दिया था। पल्लवी जानती है। नींद आज भी नहीं आयेगी। देर तक वह जागती रहेगी। फिर पास की फैक्ट्री से आती हुई मशीनों की आवाजें वह सुनेगी। सितार की अनुगूँजें नहीं। फिर सिरहाने रखा टेबल लेम्प जलाकर वह कुछ पढ़ेगी। किन्तु पल्लवी ने आज वैसा कुछ नहीं किया। नितिन बाबू को लेकर फिर सोचने लगी थी पल्लवी। पल्लवी ने डाक्टर नितिन को आते-जाते कई बार देखा है। वही सफेद टेरीकाट की पेन्ट और बुशशर्ट पहने। हाथ में बैग लिये जब–तब। कभी स्कूटर पर। पल्लवी ने सदा ही नितिन के मुख पर एक गंभीरता का भाव देखा था। पल्लवी का सामना होने पर भी उन्होंने उसकी ओर सप्रयत्न कभी नहीं देखा था।

पल्लवी को बड़ी रहस्यमयी लगती है डाक्टर नितिन की गंभीरता। बिना किसी प्रकार के अन्य कोई भाव चेहरे पर लाये क्या कोई और इतने दिन रह सकता है? जैसे कोई नाव एक ही दिशा में सदा बहती रहती हो।

किन्तु पल्लवी को उस रात जब रात 11 बजे तक भी सितार पर वह दर्द भरी धुनें सुनाई नहीं दी तो उसे सचमुच विस्मय हुआ, और पल्लवी को लगा रात का वह सूनापन जैसे अधिक प्रगाढ हो गया है साथ ही पल्लवी का अकेलापन भी।

अकेलापन। पल्लवी इस अकेलेपन की अभ्यस्त हो गई है जैसे वह अकेलापन पल्लवी की पोर-पोर मे समा गया है। पल्लवी ने जानबूझ कर ही इस अकेलेपन को ओढ़ लिया है। नहीं तो वह 5 वर्षीय अखिल को अपने से दूर कान्वेट में रखकर भला क्यों पढ़ाती? फिर भी यह अकेलापन पल्लवी को बहुत सालता रहा है। पल्लवी ने

माँ को खो दिया था, जब वह अबोध थी । पिता ने दूसरा विवाह नहीं किया । फारेस्ट डिपार्टमेन्ट की नौकरी ने उन्हें बहुत भटकाया था । और उस भटकने में उनका सहारा थी उनकी बन्दूक और शिकार । पल्लवी के लिए उन्होंने शिक्षा की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी, वह अपने से अलग रखकर । एम० ए० कर शोध कार्य पूरा किया था पल्लवी ने अपने मामा के पास रहकर । पापा बीच-बीच में आते रहते थे, उसके लिए ढेर सारे कपड़े और उपहार आदि लेकर । कितना प्यार करते थे मामा पल्लवी से । और तब मामा भी अचानक छोड़कर चले गये थे पल्लवी को । कार एक्सीडेन्ट में उनकी मृत्यु हो गई, किन्तु पल्लवी को पापा की याद नहीं भूलती । वह कल्पना में पापा का म्लान चेहरा अब भी देखा करती है । उसके मामा ने कितना चाहा था, पल्लवी उनके सामने ही ब्याह करले । किन्तु पल्लवी ने ऐसा नहीं किया था । शायद उनके भाग्य में पल्लवी का ब्याह देखना नहीं था ।

फिर पल्लवी के जीवन में आया था उदय जिसे पाकर पल्लवी ने निश्चित हो जाना चाहा था । तभी तो उसने उदय का पूरा विश्वास कर लिया था । और पल्लवी पूर्ण समर्पित हो गई थी उस समर्पण में पल्लवी को असीम सुख और तृप्ति मिली थी ।

किन्तु उदय ने उस विश्वास की रक्षा नहीं की । अनेक आश्वासन देकर विवाह की बात टालता रहा था । फिर एक दिन अचानक पल्लवी जान पाई थी, "यूनेस्को" में किसी ऊँचे पद पर नियुक्त होकर उदय विदेश चला गया था । पल्लवी का मन उसके प्रति असीम घृणा से भर गया था । तब तक शायद बहुत देर हो चुकी थी । जब डाक्टर मिसेज कपूर ने उसे वास्तविकता से परिचित कराया था तो वह कांप गयी थी, किन्तु पल्लवी टूटी नहीं थी । उसने

डाक्टर मिसेज कपूर का परामर्श भी नहीं माना था। अत्यन्त निष्ठा-पूर्वक उसने मातृत्व का निर्वाह किया था। फिर होश सम्भालने पर अखिल ने जानना चाहा था अपने पापा के बारे में। अपने आस-पास उसने और बच्चों के मम्मी के साथ-साथ पापा भी देखे थे। पल्लवी कहती आई थी, पापा बहुत दूर चले गये हैं विदेश में। वहाँ उन्हें ढेर से काम हैं। पापा अब कभी नहीं आयेंगे। फिर वे कब आयेंगे। पल्लवी नहीं बता पाई थी।

और फिर पल्लवी तीन वर्ष में घूमती रही थी, यायावर। इस नगर मे यह उसकी चौथी नौकरी थी। पल्लवी के लिए जैसे सब कुछ यन्त्रवत चल रहा था। वैसे पुरुषो की कमी नहीं थी पल्लवी के लिए। उनके सामने कई प्रस्ताव आये थे। किन्तु पल्लवी की आकांक्षाएँ जैसे मर चुकी थी।

दूसरे दिन पल्लवी ने नितिन बाबू के विषय मे पूछ ही लिया था गंगा से। गंगा बता रही थी, रात भर नितिन बाबू को तेज बुखार रहा है। कई गोलिया खाते रहे किन्तु बुखार नहीं उतरा। मंगल कहता है, जब-जब नितिन बाबू बीमार पड़ते हैं, किसी डाक्टर को नहीं बुलाते अपना इलाज स्वय कर लेते हैं। खुद जो डाक्टर हैं।

मंगल ने शाम को फिर गंगा को बताया था। डाक्टर साहब का बुखार नहीं उतारा है। और गंगा ने पल्लवी से आकर यही कहा था। फिर कहा था। आने का तार दे आया है, मंगल अपनी ओर से स्वयं जाकर। मालिक को उसने यह नहीं बताया था।

आठ बजते-बजते गंगा फिर कह गई थी। तबियत शायद ज्यादा खराब है। मंगल ही जबरदस्ती डाक्टर को बुला लाया है। और पल्लवी देर तक उस खिडकी की ओर देखती रही थी। आज

भी पल्लवी देर तक उस खिड़की की ओर देखती रही थी। आज भी पल्लवी सितार पर बजती हुई मीठी किन्तु पीर-भरी रागिनी सुनेगी। पल्लवी का और कुछ करने का जैसे "मूड" ही नहीं बन पाता।

और फिर अप्रत्याशित रूप से पल्लवी नितिन के यहाँ चली गई थी। जाकर देखा था, कमरे में नितिन बाबू लेटे हैं, अकेले थे। बेड के पीछे बल्ब जल रहा है। मद्धम रोशनी बिखेरता हुआ। आहट पाकर उन्होंने आँखें खोल दी थी।

"तबीयत कैसी है?" पल्लवी ने पूछा था।

"अब ठीक हूँ।" कहते-कहते डाक्टर नितिन के मुख पर विस्मय का भाव फैल गया था।

"बैठिये" उन्होंने तकिये से सिर उठाकर कहा था।

"पल्लवी बैठ गई थी। किन्तु नितिन का चेहरा देखकर उसके मन में करुणा भर गयी थी। वे नेपकिन से बार-बार पसीना पोंछ रहे थे।" "आपने क्यों कष्ट किया?" उन्होंने पल्लवी से पूछा था।

पल्लवी उत्तर नहीं दे पाई थी। पल्लवी को लग रहा था, कितना निरर्थक प्रश्न किया गया था उससे फिर कमरे मे घड़ी की टिक-टिक का शब्द और मुखर हो गया था।

उस दिन पल्लवी ने मंगल से पूछकर अपने हाथ से "कैपसूल" दिया था नितिन को। फिर वह ओवल्टीन डालकर दूध पिलाकर लौट आई थी।

नितिन बाबू फिर अस्पताल में "शिफ्ट" नहीं हुए। पल्लवी ही उन्हें बीच-बीच में देखती रही और हाथ बटाती रही मंगल का। नितिन बाबू का ज्वर जब जाता रहा था, तब तक उनकी मांजी आ गई थी।

इसके बाद कई दिनों तक न पल्लवी ने जाकर नितिन बाबू को देखा था, न उनका सितार ही सुन पाई थी।

तभी एक दिन मंगल स्वयं संदेश लेकर आया था। डाक्टर बाबू की मांजी जा रही थी, और जाने के पूर्व पल्लवी से मिलना चाहती थी, पल्लवी को जाना ही पड़ा था। फिर मांजी ने पल्लवी को कितने ही आशीर्वाद दिये थे। पल्लवी ने उनके बेटे की देखभाल जो की थी। बड़े शहरों मे इतना किसी के लिए कौन करता है। फिर नितिन बाबू की माँ बताती रही थी उसे, न जाने ऐसा क्या घर कर गया है, नितिन के जीवन में कि उन्होने चिरकुमार रहने का व्रत लिया था। पल्लवी के सामने सदा की भांति नितिन बाबू मौन बैठे रहे। फिर माँ से विदा लेकर पल्लवी जब उठ खडी हुई थी, वे उसे द्वार तक छोड़ने आये थे। पल्लवी ने एक बार पीछे मुड़कर देखा था, वे उसे जाता हुआ देख रहे थे।

फिर पल्लवी ने स्वयं से पूछा था, नितिन बाबू की बीमारी में उसका बार-बार जाना क्या निरी सौजन्यता थी, उससे अधिक क्या कुछ नही? पल्लवी सोचती रही थी, उसके जीवन मे यदि उदय के स्थान पर नितिन बाबू आये होते तो। तो शायद यह सब न घटता। किन्तु जो घट ही चुका है। यह अतीत है। अतीत में जिया नही जा सकता। अनागत ही में जिया जा सकता है।

और मां जी के चले जाने पर नितिन का वह क्रम चल निकला था।

पल्लवी एक दिन संध्या को फिर डाक्टर नितिन के यहां चली गई थी। मंगल को उसने काफी नही बनाने दी थी। स्वयं किचन मे जाकर दो प्याले काफी तैयार की थी। फिर बात शुरू की थी पल्लवी ने। उसने नितिन बाबू से ब्याह न करने का कारण जानना चाहा था। किन्तु डाक्टर नितिन उसे निष्प्रयोजन कहकर ही टाल गये थे।

पल्लवी ने नितिन से सितार बजाने का आग्रह किया था, और उन्होंने वह स्वीकार या। फिर अनेक बार इसकी आवृत्ति हुई थी। उन दोनों के बीच जैसे इन आवृत्तियों ने ही एक विश्वास का सेतु निर्माण कर दिया था। फिर पल्लवी डाक्टर नितिन से अपना पूर्व इतिहास छिपा नहीं पाई थी। और पल्लवी का वह पूर्व इतिहास डाक्टर नितिन को कहीं भीतर बहुत गहराई से छू गया था। क्या अब भी पल्लवी को याद है उदय की। उन्होंने जानना चाहा था। तब पल्लवी ने कहा था। नारी केवल मन नहीं, शरीर भी जीती है और जिसे शरीर और मन, दोनों से जिया जाता है, उसे भुलाया जा सकता है क्या?

किन्तु डाक्टर नितिन ने तो केवल मन ही जिया था। फिर भी क्या उसे वे भुला पाये थे? तब डाक्टर नितिन इतने 'मेच्योर" नहीं थे। किन्तु किशोर-मन के उस प्रेम ने और उसकी सफलता ने उन्हें कहीं बहुत भीतर से तोड़ दिया था।

उस दिन रविवार था। पल्लवी ने डाक्टर नितिन को डिनर पर बुला लिया था। खाना-खाने के पहले वह "एलबम" उठा लाई थी। फिर अपनी बचपन की तस्वीरें, मम्मी-पापा के फोटो और अखिल के कई चित्र वह बताती रही थी। उनमें उदय का कोई चित्र न था। फिर पल्लवी ने बड़े यत्न से स्वयं खाना परोसकर उन्हें खिलाया था। खाना खाकर उसने रेकार्ड चेंजर पर रविशंकर के कई रेकार्ड लगाये थे। डाक्टर नितिन के अत्यन्त निकट ही वह सोफे पर बैठी रही थी। डाक्टर नितिन की आंखों में एक स्निग्धता थी, और कृतज्ञता का भाव। फिर बड़ी देर तक वे बातें करते रहे थे। डाक्टर नितिन ने काफी रात बीतने पर जाना चाहा था, किन्तु पल्लवी ने स्वयं हाथ पकड़कर उन्हें रोक लिया था। अपने बेडरूम में जाकर चादर बदलकर उनके लिए

"बेड" ठीक किया था, और स्वयं बाहर के कमरे में ही सोफे पर तकिया सिरहाने रख लाइट ऑफ कर सो गई थी।

किन्तु डाक्टर को सारी रात नींद नहीं आई थी। वे दो बार उठकर ड्राइंग रूम में देख आये थे। पल्लवी उसी निश्चिंता से सो रही थी।

सुबह जब नींद टूटी थी तो डाक्टर नितिन ने देखा था पल्लवी ने वाशबेसिन पर धुला हुआ तौलिया रख दिया था। "गीजर" भी वह आन कर आई थी। डाक्टर नितिन ने बड़ी सहजता से हाथ मुँह धोया था, फिर चाय पीकर अपने घर चले गये थे। डाक्टर नितिन ने उस दिन संध्या को भी पल्लवी को अपने यहाँ प्रतीक्षा करते हुये पाया था। पल्लवी ने मंगल को भोजन नहीं बनाने दिया था। उस रात का भोजन भी पल्लवी के घर करना पड़ा था।

एक दिन शाम डाक्टर नितिन फिर पल्लवी के यहाँ आये। फिर एक लिफाफा उन्होंने पल्लवी के हाथों मे दे दिया। नाइजीरिया गवर्नमेन्ट ने उन्हे चार वर्ष के लिये अपने यहाँ नियुक्ति दे दी थी। अब उन्हें सप्ताहांत ही मे वहाँ जाना था।

पल्लवी ने नियुक्ति पत्र पढ़कर लौटा दिया था। और संधी हुई आवाज मे पूछा था, क्यों न वे साथ-साथ भोजन करें। और फिर कोई पिक्चर देख लें।

डाक्टर नितिन देखते रहे थे पल्लवी ने दोनों के लिये स्वयं भोजन बनाया था। सदा की भाँति परोसकर साथ-साथ खाया था। किन्तु कितनी अनभिज्ञता लगी थी नितिन को उस सब में?

पिक्चर-देखकर पल्लवी ने डाक्टर नितिन को रात अपने घर ही रोक लिया था। डाक्टर नितिन शायद पल्लवी से कुछ कहना

चाहते थे। दो बार पल्लवी को सम्बोधित भी किया था, किन्तु वे कुछ कह नहीं पाये थे।

किन्तु जैसे कहना अब बहुत आवश्यक हो गया था। वे बहुत धीरे-धीरे बोले थे। अब उनके लिए अकेले रहना सम्भव नहीं होगा। पल्लवी और वे, क्या दोनों एक सूत्र में नहीं बंध सकेंगे? फिर सामाजिकता और औचित्य की बात कही थी डाक्टर नितिन ने।

प्रत्युत्तर में पहले पल्लवी कुछ बोली नहीं थी। नीची दृष्टि किये वह केवल बैठी रही थी। डाक्टर नितिन ने जब बार-बार अनुरोध किया था तो बड़ी कठिनाई से वह कह पाई थी, अब पल्लवी में ऐसा कुछ शेष नहीं था, जिसे वह उन्हें दे सकती थी।

फिर पल्लवी ने कॉलेज से तीन दिन की छुट्टी ले ली थी। उसने डाक्टर नितिन के साथ दौड़-धूप की थी। उनका वीसा बन गया था। "एयर इण्डिया" जाकर सीट बुक कराई थी। फिर नितिन को विदा देने वह एरोड्रम भी गई थी। अनाउन्सर ने तीन बार डाक्टर नितिन का नाम पुकारा था। डाक्टर नितिन नमस्ते कर चल दिये थे। फिर जाते-जाते उन्होंने पल्लवी की ओर एक बार घूमकर देखा था।

प्लेन के टेक-ऑफ लेते ही पल्लवी की पलकें भीग गई थी। "एरोड्रम" पर वैसी ही चहल-पहल थी। पलाइटों के अनाउन्समेन्ट, विदा देने हेतु हिलते हुये रूमाल। किन्तु पल्लवी को लग रहा था, कितनी अकेली थी वह?

वह अकेलापन, जिसे स्वयं उसने ओढ़ा था, उस भीड़ में खो जाने से शायद कहीं अच्छा था।

□

अपने ही बीच

रोज की तरह झुटपुट अंधेरा गहरी शाम और शाम फिर घनी रात्रि में कब की बदल चुकी है। आसपास सन्नाटा छाता जा रहा है। पीछे की सड़क पर दौड़ते हुए आटो-रिक्शा, बसों और ट्रकों का शोर कब का थम चुका है। जब-तक सिर्फ कोई स्कूटर गुजर जाता है, जिसकी "फिर्र-फिर्र" गहन रात्रि के मौन में गूंजकर फिर लुप्त हो जाती है।

सुनीता जाग रही है। रोज ही वह जागती है। फिर आज का मौसम तो बेहद खराब है। दो दिन से बराबर बारिश हो रही है, बे-मौसम की बारिश। हवा में बेहद नमी है, सरदी भी। सुनीता बीच-बीच में खासती है, फिर खांसी का वेग रोकने के लिये मुंह से रूमाल लगा लेती है, आंखों मे आते हुए आंसुओं को पोंछ डालती है, पर कैसी है यह खांसी जो रुकती ही नही ?

एक साल से अन्दर-अन्दर ही यह खासी बढ गई है। जब आती है तो लगता है सुनीता का दम ही उखड़ जाएगा। काश किसी दिन ऐसा हो जाए तो इस सबसे मुक्ति मिले—सोचती है सुनीता। पर मुक्ति किससे ? अपने आपसे, या इस "नर्क" से। "नर्क" हां, हां "नर्क" अनीता ने यही तो संज्ञा दी थी उसके घर को। अनीता छोटी बहन। हफ्ता भर रहने आई थी बड़ी बहन के यहां "न जाने कैसे तुम दिन काट रही हो दीदी" कहती थी अनीता, पल भर भी चैन नही मिलता। अभी पिछले साल ही "प्लूरिसी" से उठी हो। वो तो पापा ने इलाज के लिए रुपया भेजा था, तो जान बच गई। वरना

जीजाजी ने तो कभी फिक्र ही नहीं की थी। किसी दिन भी उन्हें दो घड़ी तुम्हारे पास बैठे नही देखा। न तुम्हारे पास ढंग के कपड़े हैं, न बच्चों के पास ही। कर्ज में श्राकंठ डूब चुकी हो। अपना एक एक गहना बेच चुकी हो, घर का खर्च चलाने के लिए, पर जीजाजी के कान पर जूँ तक नही रेंगती। वही रोज देर से लौटना अपनी सुध-बुध खोए हुए नशे में धुत और सुबह देर तक सोते रहना। ईश्वर ने सभी कुछ दिया है, घर पत्नी बच्चे। पर जैसे उन्हें किसी से सरोकार ही नही है। बेकार की जिद है, वर्ना नौकरी कर लो। आखिर पापा ने किस लिए पढ़ाया लिखाया था तुम्हें ?

हाँ ! सुनीता पढ़-लिखकर भी नौकरी नही करना चाहती। लड़की बड़ी है सुधी, बारह की होकर पिछले चैत्र से तेरहवें में लगी है। वैसे ही तीखे नाक-नक्श, गौरवर्ण और इकहरा शरीर। सुनीता जब अपनी बेटी को देखती है तो उसे बारह वर्षीय सुनीता याद आ जाती है। इस साल वह एस. एस. सी. की परीक्षा देगी।

बारह वर्षीय सुनीता, फिर और आठ वर्ष। इक्कीसवाँ लगते ही पापा ने ब्याह दिया था। सुनीता जब इस घर में ब्याह कर आयी थी, तब सब कुछ ऐसा न था। परेश ने उसे बेहद प्यार दिया था। पति का प्यार पाकर जैसे निहाल हो गई थी सुनीता। किन्तु उस प्यार मे जैसे विष घुलता गया था। परेश ने वैसे अपने जीवन को किसी भयंकर दिशा की ओर मोड़ दिया था। शुरुआत दोस्तो की पार्टियो से हुई थी। फिर परेश ने घर पर भी पीना शुरू कर दिया था, उन दोस्तो के साथ, पीना ही नही, ताश खेलना भी। फिर नशा कर गाली-गलौज और मारपीट तक नौबत आई थी। सुनीता ने विरोध किया था, किन्तु हार गई थी सुनीता। शायद उसकी पुकार परेश को उस रास्ते से लौटाने में असमर्थ थी।

सुधी मा की पीड़ा अब समझने लगी है। कहती है "यह तुम

कब तक सहोगी मम्मी, तोड़ डालो यह सारे बंधन। पर सुनीता कैसे तोड़ डाले यह बंधन, कैसे मार ले अपने पैरों में कुल्हाड़ी ? हाँफती हुई सुनीता कहती है, "तेरे पीले हाथ कर दूँ बेटी और सलिल को किसी लायक बना दूँ। बस और कुछ नहीं चाहिए मुझे।" सलिल बहन से तीन वर्ष ही छोटा है. किन्तु उसकी तरह समझदार नहीं। खेलने में ही मन लगता है उसका। दिन भर आवारा लड़कों के साथ घूमता है। पापा उसे दोस्त मानते हैं। साथ-साथ खिलाते पिलाते हैं, "जैसे यह भी उनकी श्रेणी में आ जायेगा किसी दिन। सुधा कहती है, "पापा सलिल को भी बिगाड़ रहे हैं, बड़े होने पर यह भी पापा की तरह.........."

"बस अब चुप भी रह सुधी" सुनीता उसके मुँह पर हाथ रख देती है। पर सुधी सच ही तो कहती है। सुनीता प्रतिदिन यह अपमान सहती है। उसका पति पियक्कड है, जुवारी है और न जाने क्या क्या ? पड़ौस की औरतें काना-फूँसी करती हैं आज फिर उसका पति नशा करके आया है। फिर गाली गलौज शुरू होगी, मारपीट भी। मुहल्ले भर का सोना दुश्वार हो जाएगा। सुनीता शर्म से गड़ जाती है।

सुनीता को जैसे काट रहा है। उसकी चुभन सुनीता के शरीर के रेशे-रेशे में जैसे प्रवेश करती जा रही है, सुनीता कबल उतार फेंकती है और फिर वैसी ही खाँसी उठती है, वैसे ही दम फूलने लगता है। सुधी को माँ टटोलती है........। अरे ! तुम्हें तो फिर बुखार है मम्मी। कंबल को फेंक रही हो। एक टेबलेट ले लो पानी से।"

सुनीता उत्तर देती है........"बुखार कोई नया नहीं है मुझे

पर तू अब तक क्यों जाग रही है सुधी बेटी। कल से तेरी टेस्ट है। जल्दी उठकर पढ़ने बैठना होगा।"

"भाड़ में जाय मेरी पढ़ाई" कल स्कूल नहीं जाऊँगी। टेस्ट भी नहीं दूँगी। पहले डाक्टर शर्मा अंकल को तुम्हें दिखाने ले जाऊँगी। यह रोज रोज का बुखार क्या अच्छा है ?" सुधी का स्वर रुआंसा हो जाता है।

"क्या अच्छा है, क्या अच्छा नहीं है मैं खुद समझती हूँ।" सुधी – अपने स्वर का खोखलापन सुनीता साफ-साफ पहचानती है, "तुझे स्कूल जाना होगा, टेस्ट देने ही होंगे। तुम्हें अपना भविष्य देखना ही होगा। मेरा क्या, आज मरी कल दूसरा दिन।" सुनीता का यह कहना कुछ अन्दाज रखता है, जो सुधी को निरुत्तर कर देता है। सुधी को ही नहीं सलिल को भी। तभी सलिल रोज वादा करता है, अब वह ज्यादा घूमने नहीं जायेगा, दोस्तों में रात देर तक नहीं रहेगा। पर अपने इस वचन की वह रक्षा नहीं कर पाता, यह दूसरी बात है।

सुनीता कल्पना में देखती है, सलिल बड़ा हो गया है। बहुत बड़ा सजा-संवरा युवक, ठीक अपने पापा की तरह। वैसे ही घुंघराले बाल, मासूम चेहरा और वही हँसने का अन्दाज। फिर उस चेहरे की कोमलता, कठोरता में बदल जाती है, बाल तेल के अभाव में बेतरतीब उलझ जाते हैं। हँसने का अन्दाज किसी अन्धे कुँए में डूब जाता है सलिल का अस्तित्व जैसे परेश के व्यक्तित्व में बुरी तरह बदल जाता है। उसका अपना व्यक्तित्व ही नहीं। सारा व्यवहार अपने पिता का ही आकार ग्रहण करने लगता है वैसा ही घिनौना और विद्रूप— और सुधी कहती है.........पापा सलिल को भी बिगाड़ रहे हैं, बड़े

होने पर वह भी पापा की तरह ......

"नही नही ...... ऐसा नही होगा। कभी नही होगा" ......
माँ की आवाज सुनकर सुधी चौंक पड़ती है। क्या हुआ मम्मी ?'
वह सुनीता को झकझोरकर पूछती है। 'फिर कोई सपना देख रही
थी मम्मी ?"

"कैसा सपना ? हाँ हाँ सपना ही।" सुनीता कहती है, "बड़ा
बुरा सपना था सुधी बेटा।" पर तू। अब तक जाग रही है क्या ?

सुधी उत्तर नही देती। माँ हर दिन जानती है, देर तक वह
भी जागती है, माँ ऐसा ही सपना देखती है, ऐसे ही चौंकती है वह
फिर यूँ ही चुप रह जाती है। रोज की तरह फिर दरवाजे पर दस्तक
होती है। दरवाजा खुलते ही एक अधेड़ पुरुष प्रवेश करता है, सूखे
उलझे बालोंवाला चेहरा लिए, मैली पैंट और बुश-शर्ट पहने लड़खड़ाते
कदमों से चलकर वह पुरुष चारपाई पर लुढ़क पड़ता है।

न जाने क्यों अब बार-बार यह दृश्य सुनीता की कल्पना में आ
रहा है। आता ही जा रहा है। शायद सुनीता का बुखार बढ़ गया
है। वह अपने माथे को छूती है, जो तवा सा जल रहा है।
सुनीता कम्बल उतार कर फेंक देती है। वह उठकर बैठ जाती है।' क्या
अभी तक नही लौटे हैं वे बेहद घुटी हुई आवाज मे सुनीता अपने आपसे
पूछती है। "सुधी सो गयी क्या बेटी ?" सुधी करवट बदलकर रह
जाती है। सुनीता को लगता है इसका गोरा चेहरा अधिक पीला पड़
गया है। जरूरत से ज्यादा लम्बा दिखाई देता है उसका चेहरा और
सलिल, पास ही सो रहा है गहरी नींद में डूबा हुआ सारी स्थितियों
से बेखबर।

ग्रौर सुनीता सोचती है, ग्राज परेश शायद नहीं ग्राएगा। कभी-कभी ऐसा भी होता है। परेश यानी उसका पति। पिछले शनिवार को भी तो वह रात भर नहीं ग्राया था। शायद वह शनिवार ही था।""ग्राज ग्राज, भी तो शनिवार है।""""शनिवार""/""नहीं नहीं""""शुक्रवार, शायद शनिवार हो।""""

□□

आक्टो-पस

तकलीफ और तनावों से भरी हुई वह शाम किसी तरह गुजर गई थी। वैसे यह सब वर्तिका के साथ अप्रत्याशित रूप से ही घटित हुआ था जिसकी उसे आशा न थी। कम से कम एक नव-वधू की आशा-आकांक्षाओं के विपरीत ही था वह सब।

रात्रि के नौ बजते-बजते वर्तिका को उसके कमरे में पहुँचा दिया गया था। अपने कमरे का द्वार बन्द कर वर्तिका ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी थी। अभी कुछ देर पहले ही उसे देख कर किसी ने कहा था "वरुण की बहू तो बहुत सुन्दर है" और उस कथन की सार्थकता वर्तिका प्रत्यक्ष देख रही थी।

कदाचित् वर्तिका की यह सुन्दरता ही आज उसका दोष बन गई थी। "सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर" । यह उसकी सास कह रही था। "सुन्दरता को क्या चाटा जाता है। हर बात के लिए सलीका होना चाहिए।" और जीन्स और स्लीवलेस शर्ट पहने उसकी दूर के रिश्ते की वह ननद कह उठी थी—"वरुण भैया के लिए तो तुम्हें कोई अप-टू-डेट बहू लानी थी चाची वर्तिका भाभी बिल्कुल स्मार्ट नहीं है। न जाने क्या देख कर चाचा ने शादी कर ली है? बात धीरे ही कही गई थी, किन्तु वर्तिका ने सुना भर ही नहीं, देखा भी था। जीन्स वाली वह ननद अपना पर्स खोलकर, उसमें से छोटा शीशा निकाल कर अपना मेकअप ठीक कर रही थी। उसकी सास कहे जा रही थी— "तुम्हारे चाचा की बात छोड़ो मधु। उन्हें न कभी अक्ल थी, और न

कभी आएगी। तुमने देखा नहीं ? मिसेज माथुर, शैल की मम्मी और शीला जी भी दहेज का सामान देख कर कैसा मुँह बिचका रही थी। सोफा सेट सस्ता-सा और घटिया कपड़े, सब हैंडलूम के, और साड़ियाँ सस्ती वुलों या टेरेलीन की। हमारे यहाँ तो नौकरानियाँ भी इनसे अच्छा पहनती है। फ्रिज और टी. वी. की तो बात ही छोड़ो। बिसात ही नहीं थी तो वहां पर ही क्यों देना था ?

तभी बाबूजी भीतर आ गए थे। बाबूजी अर्थात् वरूण के पिता तुम फिर वही सब लेकर बैठ गई। कहा न, यह सब कहने से अब कोई फायदा नहीं। मैंने तो तभी कहा था। 'यह सब कबाड़ लाने की कोई जरूरत नहीं पर सुने तब न।" तो क्या हुआ ? अब भी क्या बिगड़ा है ? यह सारी चीजें लौटा दो। हमें इनकी जरूरत नहीं है— वर्तिका की सास ने उत्तेजित होते हुए कहा था, और सुनते-सुनते वर्तिका के मुख पर एक उदास भावना फैल गई थी। फिर उसे तुरन्त बाबा की याद आ गई थी। उसकी मम्मी से कहा था—"बड़े घर में 'रिश्ता तो कर रहे हो पर सब कुछ सोच लिया है न।"

"सोच लिया है।" कहते पापा धीरे से हँसे थे" वर्तिका जहां जाएगी, सबको मोह लेगी। वरूण का सौभाग्य है कि वह उसकी बहू बनने जा रही है। मैं अपनी बेटी को खूब जानता हूँ" फिर कितनी दौड़ धूप वाले वे दिन थे। पापा ने ऐस. बी. एफ. से विथड्राल किया था। कुछ लोन भी लिया था फिर एक-एक कर के वे और वर्तिका हर चीज खुद जाकर खरीद कर लाये थे, पापा ने ही कहा था—अपने पसन्द की सब चीजें खरीद लो बेटी।

"यह सब कबाड़ लाने की क्या जरूरत थी ?" वर्तिका के "कानों में बाबूजी के इन शब्दों की अनुगूंज अब भी सुनाई पड़ रही

थी। कभी-कभी शब्दों की मार भी कितनी असह्य होती है, असह्य और पीड़ा-दायक। वर्तिका को पहली बार अनुभव हुआ था।

उसकी पसन्द। इस करुण परिस्थिति मे भी वर्तिक को हँसी आ गयी थी। फिर खड़े-खड़े उसने अपने कमरे का जायजा लिया था सारा कमरा काफी दहक भड़क से सजाया गया था। उसने पहली बार ही सब कुछ देखकर तय कर लिया था। वह बैड कवर बदल डालेगी दीवारों पर भी इतनी सारी पेंटिंग और तस्वीरें नही चाहिये। और यह चटक रंग के पर्दे। उफ् कैसा है इन सबका टेस्ट ?

टेस्ट वर्तिका को याद है। उसकी क्लासमेट और एक अंतरंग सहेली कहा करती थी—"दिस इज द एज। जरा टिप-टाप रहना चाहिए तुझे इन फीके-फाके रंगों की साड़ियों मे पर्सनेलिटी दिखाई ही नही देती। जरा भी स्मार्ट नही लगती है तू। इंप्रेस करने के लिए ढंग से रहाकर। और सही ही वर्तिका देखती थी। उसकी कुछ सह-पाठिनें काफी बन-ठनकर कॉलेज आया करती थी, उनके माता पिताओं की आर्थिक स्थितियां उससे अपनी स्थिति से कहीं बेहतर थी वे रोज नए-नए फेशन में अपने को प्रदर्शित करती थी। "माड" बनने के लिए कामिक्स और सेक्स और क्राइम के अंग्रेजी उपन्यास पढ़ती थीं और अंग्रेजी फिल्मों पर अक्सर बहसें करती थी – किन्तु उन सबका अपवाद थी वर्तिका। और वर्तिका को याद आया उसकी ननद ने कहा था—वरुण भैया के लिए तो तुम्हे कोई अप-टू डेट बहू लानी चाहिए थी चाची, वर्तिका भाभी बिल्कुल स्मार्ट नहीं है।"

वरुण के आने की आहट हुई, वर्तिका सोफे से उठ खड़ी हुई रेशमी कुरते और सफेद-झक पायजामे में वरुण काफी सज रहा था। वह सोफे पर बैठ गया। फिर जेब से सिगरेट-केस निकालकर उसने एक

सिगरेट जलाई और फिर अपने ओठो से उसे लगा लिया। वह कश लेने लगा। वर्तिका ने देखा सिगरेट केस काफी कीमती था और सिगरेट भी। वरुण ने अपनी कलाई में भी कीमती घड़ी बाध रखी थी—इलेक्ट्रानिक्स की—शायद इम्पोर्टेड थी। यह वह घड़ी नही थी जो उसके पापा ने दी थी।

वर्तिका ने वरुण की अगुलियाँ देखी तो वह दग रह गई पापा की दी हुई अगूठी उसने उतार दी थी, और उसकी जगह उसकी अगुली मे काफी वजनी हीरा जड़ी अगूठी थी जिसमे अग्रेजी का "व्ही" खुदा हुआ था। यह सब अहसास करा रहा था कि वरुण को पापा की दी हुई वे चीजें पसन्द नही आई थी, किन्तु वरुण ने तो उसे पसन्द किया था शादी के पहले वे दो-तीन बार मिले थे। वरुण की सहमति से ही तो यह विवाह हुआ था।

वरुण लगातार सिगरेट पिये जा रहा था, और खड़ी-खड़ी वर्तिका उस दवाव को झेल नहीं पा रही थी।

आखिर वर्तिका अपने चेहरे पर अत्यन्त सहज भाव लाकर सोफे पर बैठ गई। "आई एम सारी" कहते हुए वरुण ने एश्ट्रे मे सिगरेट बुझा दी। फिर उसने एक आरोपित अनभिज्ञता से अपनी नव-विवाहिता पत्नी को ओर ताका। फिर हीरे-जड़ी अगूठी से वह खेलने लगा। शायद अपने बड़े आदमी होने का वह वर्तिका को अहसास करा रहा था।

"लगता है, अम्माजी और बाबूजी खुश नही है" वर्तिका ने आहिस्ता से अपनी बात शुरू की। वरुण चुप रहा वर्तिका चाहती थी, वरुण कहे-मुझे तो तुमसे कोई शिकायत नहीं है। पर ऐसा कुछ भी नही हुआ।

माकटो—पस]

"मुझे पता नहीं था''''आप सब''''" आगे शब्द वर्तिका के गले में ही घुट कर रह गये। "तुम्हें पता नही था पर तुम्हारे पापा को तो सब पता था—" वरूण ने खीझ कर कहा था। "एक आई. सी एस. घर के लिए कैसा स्टेन्डर्ड होना चाहिए, यह वे खूब समझते थे। वे तो काफी "शो-आफ" कर रहे थे, जब बात तय हो रही थी।"

"उन्होंने तो कभी जाहिर नहीं किया कि वे बड़े आदमी हैं"—वर्तिका ने अत्यन्त विनम्र भाव से कहना चाहा।

"हो सकता है—पर हम लोगों की भी तो कोई पोजीशन है स्टेटस है"''''वरूण ने कहा। "दरअसल मम्मा और बाबूजी के काफी अरमान थे। मैं भी अपने दोस्तों को बारात में ले जा कर पछताया "एक ढंग का "रिसेप्शन" तक तुम्हारे पापा नही दे सके। क्या कहते होंगे वे सब "कहते-कहते वरूण का चेहरा तमतमा आया। वर्तिका उसकी तपन महसूस कर रही थी ''''

दूसरे दिन वही जीन्स वाली ननद आ गई थी। आज वह कीमती सिल्क की साड़ी में थी। पीछे-पीछे वरूण था। वह बार-बार घड़ी देख रहा था। अभी तक तैयार नही हुई भाभी ? मधु ने पूछा था। फिर बोली "तुम्हारा पाउडर कितना लाउड हो गया है। लिप-स्टिक इतनी गहरी क्यों लगती है। और साड़ी क्यों कोई अच्छी नहीं हैं ? वर्तिका कट कर रह गई थी।

"अब बस भी करो मधु"—यह स्वर वरूण का था। जो है सो ठीक है, देखनी नही, शो का वक्त हो रहा है। "फिर एक बार वर्तिका की ओर देखकर उपेक्षा से वह मुस्कराया था। उस दिन फिल्म से लौटने पर वरूण और मधु ही उस पर डिसकस कर रहे थे। वर्तिका को कुछ कहने का उन्होंने अवसर ही नहीं दिया था।

पर बात सिर्फ पिक्चर तक ही सीमित न थी । उस दिन डायनिंग टेबल पर वे लोग साथ-साथ खाना खा रहे थे । मधु ने टोका था "भाभी, आवाज बहुत हो रही है, फार्क सीधे हाथ में क्यों पकड़ रखा है ?" और वर्तिका सुन-सुन कर कुढ़ रही थी । जी मे आया था—कह दे, मैं कोई दूध पीती बच्ची नही हूँ । मैं जानती हूँ, खाना कैसे खाया जाता है, पर वर्तिका यह सब सह गई । उसका संस्कार उसे रोके रहा । वरूण बैठा बैठा उसे तरेर रहा था । फिर डायनिंग टैबल से वह उठ गया था । पीछे-पीछे मधु भी । विजेता का सा मुख पर भाव लिये । और वर्तिका कुछ देर तक निरर्थक बैठी रही थी । वह निरर्थकता सौ गुनी होकर वर्तिका के भीतर फैलती जा रही थी । बहुत भीतर । अगले दिन वरूण ने लच अकेले ही लिया था—

फिर उस रात काफी देर तक वरूण नही आया था । उसकी ननद ने आकर कहा था—"भैया का डिनर तो बाहर है । तुम खाना खा लो भाभी ।" वर्तिका सुन कर चौंकी थी ।

रात बीत रही थी, किन्तु उस जागरण मे भी पता नहीं वर्तिका की आंख कैसे लग गई थी ? वर्तिका अब सपना देख रही थी—एक नदी है, काफी गहरी नदी, वह और वरूण नाव में सवार है । वरूण ही नाव खे रहा है, फिर अचानक नाव डगमगाने लगी है एक विशाल लहर ऊंची उठ रही है, जिससे वह नाव टकरा गई है । भय से वर्तिका वरूण की ओर देख रही है और वरूण हँस रहा है, हँसे ही जा रहा है । अब वर्तिका लुढ़ककर नदी के जल में जा गिरी है । तभी वर्तिका देख रही है, एक विशालकाय जल जन्तु उसकी ओर तेजी से झपट रहा है अत्यन्त विचित्र आकृति, उसके चपटे सिर पर दो बड़ी-बड़ी आंखें, गहरी लाल रग की आंखे चमक रही है । उसके अनेक हाथ हैं—लम्बे और नुकीले, हाथी की अनेक सूंडो की तरह, भयानक,

उसने वर्तिका को अपनी गिरफ्त मे ले लिया है और वे मूंडे उसे कसती जा रही है। अपने नुकीले नाखून गढाते हुए। वर्तिका उस गिरफ्त से छूटने के लिए छटपटा रही है, पर वह छूट नही पाती है। वर्तिका ………

वर्तिका के मुख से एक चीख निकल जाती है। वह नीद से जाग जाती है। पसीने से लथपथ वर्तिका……… ….

□